अध्याय 9

ज़िम्मेदार दासत्व

जो कुरिंथुस वासी मूर्तियों को चढ़ाए गए मांस खाने को उचित ठहरा रहे थे, उन्होंने दो प्रस्तावों का अनुमोदन किया। पहली बात, उन्होंने ज्ञान का सहारा लिया। उन्होंने कहा, मूर्तिपूजकों की आराधना करना उनके लिए एक आवश्यक प्रयोजन था। उन्होंने सोचा कि मूर्तिपूजा जैसे पाप करने के लिए आराधक को यह विश्वास करना आवश्यक है कि उसके आराधना की वस्तु का अस्तित्व है। उनका तर्क था कि मूर्तिपूजा देह के द्वारा नहीं बल्कि मन की क्रिया है।

द्वितीय, जिन लोगों ने पौलुस से प्रश्न पूछा, उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि मूर्तियों के मंदिर में चढ़ाए गए मांस खाने से उन्हें मना करने के द्वारा, वह उनके स्वतंत्रता को अनावश्यक सीमित कर रहा था। मसीहियों की नैतिकता के सूची में स्वतंत्रता सर्वोपरी है। पापियों के संग खाना खाने की स्वतंत्रता पर फरीसियों ने यीशु का सामना किया (मत्ती 9:10-13)। जब यहूदी मसीहियों ने यरूशलेम में पतरस का "खतनारहित लोगों" के साथ खाना खाने पर उसकी आलोचना की तो उसने अपना बचाव किया (प्रेरितों 11:3)। पौलुस ने ज़ोर देकर कहा कि मसीहियों को व्यवस्था की औपचारिक प्रतिबन्ध से स्वतंत्र कर दिया गया है (गला. 5:1)। कुरिंथुस के भाई जो मूर्तियों के मंदिर में मूर्तिपूजकों के अनुष्ठान में भाग ले रहे थे, ने तर्क किया कि वे मूर्तिपूजा के किसी भी खतरे से स्वतंत्र हैं, क्योंकि वे जानते थे कि झूठे देवी-देवताओं का अस्तित्व नहीं है। उन्होंने यह माना कि जिसने मूर्तिपूजा की परिभाषा उनसे हटकर प्रस्तुत की है तो वह उनके स्वतंत्रता पर कोई प्रतिबंध नहीं लगा सकता है।

पौलुस ने अपने आलोचकों का मूर्तिपूजा की परिभाषा का तिरस्कार कर उनके प्रथम तर्क का सामना किया। उसने कहा कोई कितना भी ज्ञानवान क्यों न हो जाए इस सच्चाई को नहीं ठुकरा सकता है। जब एक व्यक्ति मूर्तियों की वेदी के पास आता है, पुजारियों को देवताओं के आगे पशु बलि करते हुए देखता है, मूर्तियों के आराधकों के साथ मंदिर में बैठता है, और उनके भोजन से कुछ हिस्सा खाता है, तो जो कुछ उसने किया वह मूर्तिपूजा ही है। कितना भी मानसिक आरक्षण या इसकी चतुर परिभाषा प्रस्तुत की जाए, वह इस सत्य को नहीं बदल सकता है। जो भी व्यक्ति अपने देह में करता है तो वह उसे अपने संपूर्ण व्यक्तित्व से किया है। पौलुस के तर्क में दम है; यह उसके शिक्षा के साथ सदैव बना हुआ है। इससे पहले प्रेरित ने देखा कि मसीही लोग शुद्ध दिए गए हैं और पवित्र किए गए हैं। उसने कहा कि तुम्हारा देह मसीह के अंग हैं। जैसे व्यभिचार की कोई चतुर

परिभाषा, ज्ञान का आह्वान, आत्मिक और शारीरिक के बीच निकटता को वेश्या के साथ सोने को उचित नहीं ठहरा सकती (6:11-15), वैसे ही ज्ञान का सहारा, कोई मानसिक स्थिति, मूर्तिपूजा को उससे नहीं बदल सकती जो वह स्पष्ट रीति से है। जब एक व्यक्ति मूर्तिपूजकों के संग बैठता और वह भी वही करता है जो वे लोग करते हैं, तो उसने भी उनके साथ मूर्तियों की उपासना की। तो ऐसे स्थिति में वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर की महिमा को एक मूर्ति के साथ साझा करता है। मानसिक आरक्षण के आधार पर व्यवहार को उचित ठहराना व्यवस्था विरोधी था। ऐसे परिस्थिति में कुछ भी व्यवस्था रहित नहीं होगा।

जो सामाजिक और आर्थिक लाभ प्राप्त करना चाहते थे और जिन्होंने मूर्तियों के मंदिरों में दिए जाने वाले भोजन में भाग लिया, उन्होंने अपनी स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाए जाने का विरोध किया। प्रेरित ने प्रत्युत्तर देते हुए कहा कि मसीही स्वतंत्रता का तात्पर्य परमेश्वर द्वारा परिभाषित स्वीकार्य और अस्वीकार्य व्यवहार अपनाना है। जब किसी के व्यवहार के द्वारा कलीसिया - विश्वासियों का समुदाय, की शांति और आत्मिकता को खतरा होता है - तो यह गलत है। इससे पहले उसने यह तर्क प्रस्तुत किया कि एक मसीही जब अन्याय सहता है तो वह ठीक करता है, इसके बजाय कि वह अपने साथी विश्वासी के विरूद्ध मुकदमा लड़े (6:7)। जब पौलुस ने देखा कि मूर्तियों के मंदिर में बैठने से निर्बल भाई के लिए यह ठोकर का कारण बनता है, तो यह व्यवहार ठीक नहीं था, चाहे कोई कितना भी इसके विषय अपनी सफ़ाई प्रस्तुत करे। यहाँ तक कि यदि उसके विरोधी चाहे ज्ञान का सहारा लेने में ठीक ही क्यों न हो, मसीही स्वतंत्रता का तात्पर्य उन भाइयों एवं बहनों, जो आत्मिक रूप से परिपक्व नहीं है, के विश्वास का अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

पौलुस का प्रेरिताई अधिकार (9:1, 2)

1क्या मैं स्वतंत्र नहीं? क्या मैं प्रेरित नहीं? क्या मैं ने यीशु को जो हमारा प्रभु है, नहीं देखा? क्या तुम प्रभु में मेरे बनाए हुए नहीं? 2यदि मैं दूसरों के लिये प्रेरित नहीं, तौभी तुम्हारे लिये तो हूँ; क्योंकि तुम प्रभु में मेरी प्रेरिताई पर छाप हो।

आयतें 1, 2. इन प्रश्नों का कि **क्या मैं स्वतंत्र नहीं? क्या मैं प्रेरित नहीं? क्या मैं ने यीशु को जो हमारा प्रभु है, नहीं देखा?** और **क्या तुम प्रभु में मेरे बनाए हुए नहीं?** का मूर्तिपूजा से संबंध स्पष्ट नहीं है। इस अनुच्छेद का संदर्भ बहुत महत्वपूर्ण है। सातवें अध्याय में पौलुस ने उन प्रश्नों का उत्तर देना प्रारंभ किया था जिनको कुरिंथुस की कलीसिया ने उनसे पूछा था। “अब” 8:1, प्रश्नों का दूसरा श्रृंखला परिचित कराता है जो मूर्तिपूजा से संबंधित था। प्रथम दृष्टि में, ऐसा प्रतीत होता है कि जिन प्रश्नों को कुरिंथुस की कलीसिया ने पूछा था अब वह अध्याय 9 से 11 से दूर हो रहा है। लेकिन, जब हम इसका बारीकी से अवलोकन

करते हैं तो पता चलता है कि प्रेरित इस विषय को बिल्कुल नहीं बदल रहा है। बल्कि, *वह अपने पाठकों को मनाने के लिए अपना ही उदाहरण प्रस्तुत कर रहा था ताकि वह उनके स्वतंत्रता को उनके प्रभाव में बदल सके।* जैसा उसने अक्सर अभ्यास किया था, प्रेरित ने उनके सम्मुख अपने आपको एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया। यदि कुरिंथुस वासियों का परमेश्वर के प्रति निष्ठावान होने के कारण मूर्तियों के मंदिर में मांस खाने से प्रतिबंध लगता है, तब यदि पौलुस ने ऐसा नहीं किया होता तो यह प्रतिबंध आगे को नहीं लगा रहेगा। प्रेरित ने मसीही जीवन का आदर्श धरकर मसीह की शिक्षा दी।

9:1 में पौलुस ने कुछ आलंकारिक प्रश्न पूछे जिसका उत्तर "हाँ" में दिया जाना चाहिए था। हाँ, वह स्वतंत्र था। निस्संदेह, वह एक प्रेरित था। उसने यीशु प्रभु को देखा था। हाँ, कुरिंथुस वासी प्रभु में उसके कार्य के प्रमाण थे। फिर भी, पौलुस का स्वतंत्र होना, प्रभु को देखना, और प्रभु में उसका परिश्रम उसके केंद्रीय दावा के आधीन थाः जो उसके मिशन ज़िम्मेदारी, अधिकार, और प्रेरिताई के विशेषाधिकार में सम्मिलित था। यद्यपि वह एक प्रेरित थे, लेकिन कुरिंथुस वासियों के लिए और क्योंकि उसने यीशु की सेवा प्रभु जानकर किया था, अधिकार जमाने के बजाय दुःख उठाना उचित समझा। प्रेरित ने उन लोगों को चुनौती दी जो यह कह रहे थे कि वे मूर्तियों के मंदिरों में चढ़ाए गए मांस खा सकते थे क्योंकि वे स्वतंत्र थे; जिस प्रकार पौलुस ने अपने स्वतंत्रता का दावा किया है, ऐसा करने के लिए उन्हें अपने विचारों पर पुनर्विचार करना पड़ेगा। मसीह के राज्य के खातिर उनको उनके कुछ अधिकार त्यागने के लिए उसने उनसे आग्रह किया कि जिस बात का उसने स्वयं अभ्यास किया है, उसका वे अनुकरण करें।

पौलुस का प्रश्न कि उसने प्रभु को देखा है, के बाद उसके प्रेरिताई के बारे में प्रश्न उठा। इन प्रश्नों का क्रम पौलुस के चतुराई को प्रमाणित करता है कि प्रेरिताई प्रभु को देखने पर आधारित है। उसके प्रेरिताई की सेवकाई की यह मांग थी कि वह व्यक्तिगत रूप से मृतकों में से जी उठे प्रभु की गवाही दे (प्रेरितों 1:21, 22)। कालांतर में जब पौलुस ने यीशु का मृतकों में से जी उठने के बाद उस पर प्रकट होने का स्मरण किया, तो वह सावधानी पूर्वक कह सका, "...सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया" (1 कुरि. 15:8)। दमिश्क के मार्ग में मसीह का पौलुस को दिखाई देना उसी के समान था जैसा मसीह कैफ़ा या पाँच सौ लोगों पर प्रकट हुआ था। इस घटना ने पौलुस के दावे को उतना ही अधिकारपूर्ण बनाया जितना कि उन प्रेरितों के जो यरूशलेम में थे (2 कुरि. 11:5; गला. 1:15, 16)।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस क्षण प्रेरित का उस कलीसिया से जो कुरिंथुस में है, से उसके प्रेरिताई को अधिक चुनौती नहीं मिली थी। सत्य तो यह है कि कलीसिया ने उसको उससे सलाह मांगने के लिए पत्री लिखी थी (7:1) जो उस कलीसिया का उसके अधिकार के प्रति सम्मान दर्शाती है। पौलुस ने कुरिंथुस वासियों से उन सभी चार प्रत्यक्ष आलंकारिक प्रश्नों के उत्तर की अपेक्षा की थी जिसे उसने 9:1 में पूछे थे। ये प्रश्न कुरिंथुस वासियों को उतना ही स्पष्ट था

जितना कि स्वयं पौलुस को स्पष्ट था। आम सहमति से पौलुस स्वतंत्र था, वह एक प्रेरित था, उसने प्रभु को देखा था और कुरिंथुस वासी प्रभु में उसके परिश्रम के फल थे। जब पौलुस ने 2 कुरिंथियों की पत्री लिखी, तो उस समय उसके प्रेरिताई पर गहरा आघात किया गया (2 कुरि. 11:22-29); परंतु जब वह 1 कुरिंथियों की पत्री लिख रहा था तब उसने कुरिंथुस वासियों के द्वारा उसके प्रेरिताई की स्वीकृति को पक्का माना।

दूसरा कुरिंथियों की पत्री यह विश्लेषण प्रस्तुत करती है कि हाल ही में स्थापित कलीसिया तीव्रता से बदल गया है। पहला कुरिंथियों की पत्री के लिखे जाने के बाद, कुरिंथुस में नए उपदेशक (शिक्षक) आ गए थे, जो संभवतः यरूशलेम से भेजे गए होंगे। इन लोगों ने ऐसा कहा कि पौलुस का अधिकार वैसा नहीं है जैसा कि यरूशलेम के प्रेरितों का है। पौलुस व्याकुल हो गया क्योंकि "झूठे उपदेशकों" को लोग आसानी से स्वीकार कर रहे थे। बहुत से कलीसिया के सदस्य, पौलुस के अधिकार, तथा तथाकथित दूसरे प्रेरितों के पक्ष में, छोड़ने के लिए तैयार थे। परंतु, 2 कुरिंथियों 10-13 में पौलुस के बचाव के संदर्भ में जो बातें पाई जाती हैं वे 1 कुरिंथियों में स्पष्ट है।

पौलुस के शब्द यह संकेत देते हैं कि उसके प्रेरिताई को किसी प्रकार की चुनौती नहीं है। डेविड ई. गारलैंड निम्न अवलोकन प्रस्तुत किया हैः

> ... यदि पौलुस के मन में यह बात थी कि कुछ लोग कलीसिया में घुस आए थे और उन्होंने उसके विरूद्ध कलीसिया में कुछ संदेहात्मक बीज बोए थे, तो इस बात की अधिक संभावना यह था कि वह उनको टीनेस [τινες, *टिनेस* कुछ लोग; देखें रोम. 3:8; 16:17-18; 2 कुरि. 3:1; गला. 1:7)] करके संबोधित करता।[1]

जो भी उसके प्रेरिताई को चुनौती देता है, तो निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि उनमें से कुरिंथुस के रहने वाले नहीं थे। उसने कहा, **यदि मैं दूसरों के लिये प्रेरित नहीं, तौभी तुम्हारे लिये तो हूँ।**

कलीसिया के अगुवे के रूप में पौलुस की सफलता उसके अति संवेदनशीलता के कारण हुआ। जिस प्रकार कुरिंथुस के भाइयों का प्रेम सच्चा था उसी प्रकार उनके प्रति उसका प्रेम भी सच्चा था। उन दोनों के मध्य आपसी सौहार्द का दृश्य 9:2 में पाया जाता है। पौलुस और इस सभा के सदस्य, दोनों इस बात से प्रसन्न थे कि पौलुस की प्रेरिताई के छाप तथा वे उसके फल थे, जो उसने उनके मध्य प्रकट किया था (देखें 2 कुरि. 3:2)। मसीह में उनकी आशा पौलुस के अधिकार की गवाही था।

पौलुस के व्यक्तिगत अधिकार (9:3-7)

[3]जो मुझे जांचते हैं, उन के लिये यही मेरा उत्तर है। [4]क्या हमें खाने-पीने का अधिकार नहीं? [5]क्या हमें यह अधिकार नहीं, कि किसी मसीही बहिन के साथ

विवाह कर के उसे लिये फिरें, जैसा अन्य प्रेरित और प्रभु के भाई और कैफ़ा करते हैं? [6]या केवल मुझे और बरनबास को ही अधिकार नहीं कि कमाई करना छोड़ें। [7]कौन कभी अपनी गिरह से खाकर सिपाही का काम करता है? कौन दाख की बारी लगाकर उसका फल नहीं खाता? कौन भेड़ों की रखवाली कर के उन का दूध नहीं पीता?

आयत 3. पौलुस को अंदेशा था कि मूर्तिपूजा के विरुद्ध उसके दृढ़ रुख को चुनौती दी जाएगी। वह जानता था कि उसकी स्थिति कुछ संदिग्ध है क्योंकि उसकी अपनी परिस्थितियाँ वैसी नहीं थीं जैसी कि उनकी जिन्हें कुरिन्थुस में जीविका कमानी थी। यदि वह किसी मूर्ती के मंदिर में बैठने से मना कर देता तो उसे इसके लिए कोई आर्थिक अथवा सामाजिक कीमत नहीं चुकानी पड़ती। परन्तु कुछ कुरिन्थियों को चुकानी पड़ती। ऐसी दृढ़ता सरल प्रतीत हो सकती थी यदि शिक्षक औरों को वह कीमत चुकाने के लिए कहता जो उसे नहीं चुकानी थी।

पौलुस के **उत्तर** का तात्पर्य यह था: "जब मैं मूर्तियों को चढ़ाए हुए भोजन को ग्रहण करने से इनकार करूँ, तो चाहे मुझे वे परिणाम नहीं भोगने पड़ें जो तुम्हें भोगने पड़ेंगे। परन्तु अन्य परिस्थितियों में, मैं भी वैसी ही कीमत चुकाता हूँ, जैसी तुम्हें चुकानी पड़ती है।" पौलुस दृढ़ संकल्प था कि वह एक सही उदाहरण रखे। उसने सिद्धांत के अनुसार निर्णय लिया था, सुविधा के अनुसार नहीं। वह उन से जैसी आशा रखता था, पौलुस ने सब की भलाई के लिए अप्रिय परिणाम सहन किए। उसने दुर्बल मसीहियों को ऐसे मुद्दों से बचाए रखने के लिए जिनसे उनके विश्वास में समझौते की संभावना होती अधिकारों को छोड़ दिया। पौलुस का "उत्तर" इस दावे के साथ प्रारंभ हुआ कि उसने दृढ़ता से काम लिया था।

जब लोग इस बात के लिए दृढ़ निश्चय थे कि मूर्ती के मंदिर में मूर्ति को अर्पित किए हुए भोजन को खाना मूर्तिपूजा था, तो वह जितनी अपने आप से करता था, कुरिन्थी मसीहियों से वह उससे कुछ कम की अपेक्षा नहीं कर रहा था। उसके व्यक्तिगत व्यवहार ने उसकी नैतिक और धार्मिक उपदेश को बल दिया। जो मसीह का प्रचार करते हैं उनके लिए सदा ऐसा ही होना चाहिए। व्यक्तिगत उदाहरण और निराकार सिद्धांत सदा एक दूसरे को बल देते हैं। यदि ऐसा न हो, तो सुसमाचार सम्मान खो देता है क्योंकि जिसके जीवन में वह साकार दिखना चाहिए वही अपने उदाहरण से उसका मार्ग दिखाने में असफल है।

आयत 4. आपत्ति उठाने वालों के लिए 9:4-7 में और आलंकारिक प्रश्न प्रस्तुत किए गए। पौलुस ने पहले पूछा, **क्या हमें खाने-पीने का अधिकार नहीं?** इसका स्पष्ट उत्तर है, "हमें है।" राजकीय रीति से "हम" प्रयोग करने में पौलुस ने अन्य प्रेरितों और सुसमाचार प्रचारकों को भी अपने साथ सम्मिलित कर लिया। नकारात्मक μὴ οὐκ (*मे ऊक,* "क्या हमें नहीं") यूनानी भाषा में सर्वाधिक बलपूर्वक व्यक्त हो सकने वाला है। मुख्य शब्द है ἐξουσία (*एक्सूसिया,*

“अधिकार, हक”)। लेखन कला का “लाक्षणिक शब्द” प्रयोग करते हुए पौलुस ने खाने-पीने की वस्तुओं को जीवन बनाए रखने के प्रतीकों के रूपों में रखा। प्रेरितों को कलीसिया से जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक भौतिक संसाधनों की आशा रखने का अधिकार था। पौलुस का “खाने-पीने का अधिकार” कुछ उस अधिकार के समानान्तर था जिसका दावा कुरिन्थुस के लोग मूर्तियों को समर्पित भोजन खाने के लिए कर रहे थे। ये दोनों इस प्रकार से समानान्तर थे: दोनों ही स्थितियों में उस अधिकार को छोड़ना औरों की आत्मिक भलाई के लिए था।

मूर्ति के मंदिर के भोजन को न खाने की पौलुस की बात दो विचारों पर आधारित थी। पहली, यह अपने आप में गलत था क्योंकि यह मूर्ति-पूजा थी। दूसरे, इस परंपरा में सम्मिलित होने वाला दुर्बलों के लिए हानिकारक प्रभाव डालता था। अभी के लिए उसने प्रभाव डालने की बात के विषय तर्क दिया। न तो प्रेरित को और न उसके पाठकों को अपने अधिकारों के लिए हठ करने के द्वारा औरों की हानि करनी थी। प्रेरित ने मूर्ति की मेज़ से खाने की बुराई के विषय और विस्तार से अगले अध्याय में लिखा।

आयत 5. पौलुस ने अन्य अधिकारों को भी छोड़ा था। उसने बलपूर्ण नकारात्मक का प्रयोग जारी रखते हुए विवाह के विषय पूछा, **क्या हमें यह अधिकार नहीं ... ?** पौलुस को विवाह करने का उतना ही अधिकार था जितना कैफ़ा और प्रभु के भाइयों सहित अन्य प्रेरितों को था। पौलुस के साथ यात्रा करने में किसी अन्य या उसकी पत्नी को बहुत कठिनाइयाँ होतीं, परन्तु कलीसिया में उच्च ओहदे वाले अन्य लोगों के साथ उनकी पत्नियाँ होती थीं। पौलुस को यह स्वीकार योग्य लगा कि अन्य **लोग किसी मसीही बहिन को ब्याह कर के लिये फिरें** (περιάγειν, *पेरीअगेन*) इससे संकेत मिलता है कि प्रेरित विवाह को बहुत आदर देता था। उसने पत्नी को साथ लिए फिरने के लिए किसी की आलोचना नहीं की। यात्रा करना कठिन था, चाहे वह अकेले हो या फिर साथियों के साथ हो; परन्तु पौलुस ने औरों के लिए यह तंगी भी स्वीकार की। किसी अन्य को उलाहना दिए बिना, उसने अपनी कुछ स्वतंत्रता को छोड़ दिया था। उसकी आशा थी कि उसका यह उदाहरण उसके भाइयों को, कलीसिया को अधिक सबल बनाने के लिए, अपने अधिकार अलग रख देने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

पौलुस जिस विषय पर बात कर रहा था, उससे प्रासंगिक था उसके द्वारा उल्लेख करना, **जैसा और प्रेरित और प्रभु के भाई और कैफ़ा करते हैं**, और इससे प्रारंभिक कलीसिया के जीवन की एक ऐसी झलकी मिलती है जो अन्यथा नहीं मिला पाती। “जैसा और प्रेरित” का तात्पर्य उन बारहों (यहूदा को छोड़ कर और मत्तियाह को गिनकर; प्रेरितों 1:21-26)। शब्द “प्रेरित” का प्रयोग कभी-कभी सामान्य रूप से ऐसे मसीहियों के लिए प्रयुक्त होता है जिन्हें कलीसिया द्वारा किसी विशेष कार्य के लिए भेजा जाता था (प्रेरितों 14:14[2]); परन्तु पौलुस के पास “उन बारहों” का स्पष्ट अर्थ था (1 कुरि. 15:5), एक विशिष्ट दल जो एक अनुपम उद्देश्य के लिए। यह कि बारह प्रेरितों को एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए चुना गया था, मत्ती, मरकुस, लूका, और उनके पाठकों द्वारा सहज से स्वीकार

कर लिया गया था (मत्ती 10:2; मरकुस 3:14; लूका 6:13)। प्रेरितों में भी "उन बारहों" के कार्य के विषय में कम ही कहा गया है; परन्तु पौलुस तथा कुरिन्थियों की कलीसिया कम से कम उनके प्रचार कार्य से अवगत थे। यह अनिश्चित है कि पतरस अपनी पत्नी के साथ कुरिन्थुस आया था (देखें 1 कुरि. 1:12 पर टिप्पणी)।

"प्रभु के भाई" यरूशलेम की प्रारंभिक कलीसिया में, जितना समझा जाता है, उससे अधिक सक्रिय रहे होंगे। उनमें से दो, याकूब और यहूदा, ने लेख दिए जो नए नियम का भाग हैं (देखें याकूब 1:1; यहूदा 1)। प्रभु का भाई, याकूब (गला. 1:19), यरूशलेम की कलीसिया का अगुवा था (देखें प्रेरितों 15:13-21; 21:18)। दोनों, पौलुस और कुरिन्थुस के लोग, प्रभु के भाइयों द्वारा किए जा रहे यात्रा के साथ प्रचार कार्य से अवगत थे, संभवतः चारों के द्वारा किए जा रहे के (देखें मत्ती 13:55)। कुछ अप्रमाणिक ग्रन्थ, विशेषकर नाग हमादी नामक संग्रह में से ज्ञानवादी पुस्तकें, प्रभु के भाइयों का उल्लेख करती हैं। उनमें ऐतिहासिक महत्व के संस्मरण हो सकतेहैं।[3] पौलुस की टिप्पणियाँ लुभावनी हैं, परन्तु अन्त में हमें अनुमान लगाने पर छोड़ देती हैं। अन्ततः वे बारहों के कार्य या प्रभु के भाइयों के कार्यों के विषय बहुत कम ऐतिहासिक निष्कर्षों पर पहुंचने में सहायक होती हैं।

पौलुस द्वारा कैफ़ा का उल्लेख, पौलुस तथा अन्यों द्वारा उसे दिए गए आदर का सूचक है। कैफ़ा पौलुस की केवल दो पत्रियों में आता है, गलतियों और 1 कुरिन्थियों। यह अज्ञात है कि क्यों उसने अरामी भाषा के "कैफ़ा" को अधिक प्रचलित यूनानी समतुल्य "पतरस" की अपेक्षा पसंद किया। पौलुस की पत्रियों के अतिरिक्त, संज्ञा "कैफ़ा" केवल एक ही बार आता है (यूहन्ना 1:42)। दोनों ही नामों का अंग्रज़ी अर्थ होता है "पत्थर" या "चट्टान"। संयुक्त सुसमाचारों से हम जानने पाते हैं कि कैफ़ा या पतरस विवाहित था (मत्ती 8:14; मरकुस 1:30; लूका 4:38)। यह अनिश्चित है कि वह अपनी पत्नी के साथ कुरिन्थुस आया था कि नहीं, परन्तु उसकी पहली पत्री यह स्पष्ट करती है कि प्रेरित ने यहूदिया से बहुत आगे तक की यात्रा की थी। प्रेरितों बताती है कि वह तब यरूशलेम में ही था जब पौलुस और बरनबास प्रेरितों और अगुवों से परामर्श लेने वहाँ आए थे (प्रेरितों 15:7)। यह कहना सुरक्षित है कि जब यहूदी मसीही प्रभाव में बढ़ रहे थे तथा अन्यजाति मसीहियों पर अनाधिकृत माँगें रख रहे थे (देखें प्रेरितों 21:20), तब पतरस ने शहर छोड़ दिया। अन्ततः वह रोम पहुँचा, जहाँ वह शहीद हुआ। प्रेरितों में उसके यरूशलेम में होने का कोई उल्लेख 15:7 के बाद नहीं मिलता है, परन्तु पौलुस के शब्द दिखाते हैं कि पतरस की पत्नी उसकी यात्राओं में अधिकांशतः उसके साथ होती थी।

आयत 6. पौलुस की दूसरी प्रचार यात्रा के आरंभ के उपरान्त, जब वह और बरनबास अलग-अलग रास्तों पर हो लिए, बरनबास प्रेरितों में से अविद्यमान हो जाता है। पौलुस ने तीन बार गलतियों में उसका उल्लेख किया है (गला. 2:1, 9, 13), एक बार 1 कुरिन्थियों में (1 कुरि. 9:6), और एक बार कुलुस्सियों में (कुलु. 4:10)। बाद के अपने किसी भी उल्लेख में प्रेरित ने अपने और बरनबास के मध्य

हुए मतभेद के बारे में कुछ नहीं कहा। यद्यपि उन दोनों के मध्य यूहन्ना मरकुस को अपने साथ रखने को लेकर गंभीर मतभेद हुआ था (प्रेरितों 15:36-40), प्रत्यक्षतः इसके अतिरिक्त उनमें अच्छा संबंध था। पौलुस ने सदा उसके बारे में भला ही कहा है।

कुरिन्थियों को अपनी विश्वासयोग्यता दिखाने के लिए जब उसने उनसे आग्रह किया कि वे दुर्बल भाइयों के लिए अपने अधिकारों को छोड़ दें, पौलुस ने दिखाया कि उसने वही किया है जो वह उन से करने के लिए कहा रहा है। उसने तीन विशेष विषय उठाए, वह और भी अधिक उठा सकता था। पहला, उसने कुरिन्थुस की कलीसिया से आर्थिक सहायता लेने से मना किया था, यद्यपि प्रेरित होने के नाते उसका अधिकार था कि वह खाए और पीए। दूसरे, उसने बिना पत्नी के यात्रा करने का चुनाव किया, यद्यपि उसे पूरा अधिकार था कि वह पत्नी के साथ यात्रा करे। उसका तीसरा चित्रण पहले वाले की ओर लौटता है: उसका अधिकार था कि वह कलीसिया से सहायता पर निर्भर रहे, परन्तु उसने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हाथों से परिश्रम करना चुना था। उसने पूछा, या **केवल मुझे और बरनबास को ही अधिकार नहीं कि कमाई करना छोड़ें?**

कोई बाहरी व्यक्ति पौलुस को यूनानी-रोमी संसार के उन चुने हुए उच्च व्यक्तियों में से एक समझ सकता था जिनके संसाधन और स्तर उन्हें विकल्प प्रदान करते थे कि वे अपने हाथों से परिश्रम न करें। वह उच्च-शिक्षा प्राप्त था; उसके परिवार के संसाधनों ने उसे तरसुस से यरूशलेम आकर प्रसिद्ध रब्बी के चरणों पर बैठकर शिक्षा प्राप्त करने के योग्य किया था (प्रेरितों 22:3)। उसका जन्म से रोमी नागरिक होना (प्रेरितों 22:28) उसके कुल की प्रतिष्ठा की गवाही देता था। कुरिन्थुस के मसीहियों को यह आशा नहीं होगी कि पौलुस के समान प्रतिष्ठित व्यक्ति अपने हाथों से परिश्रम करके अपने खर्चे उठाएगा। जब धन और शिक्षा प्राप्त रोमी पुरुष परिश्रम करने के लिए सहमति जताते थे, तब सामान्यतः वह दासों और किराए पर लिए गए लोगों द्वारा किए गए परिश्रम के लिए होता था, अपने नहीं।[4]

यह विचार कि पौलुस को अपनी शिक्षाओं के लिए आर्थिक पूर्ति का अधिकार था, सांस्कृतिक मानकों के अनुरूप था, परन्तु उसने और बरनबास ने अपनी सेवकाई के लिए अपने इस विशेषाधिकार को त्यागना चुना था। उनके द्वारा अपने अधिकारों की माँग न करना अन्य मसीहियों के लिए ऐसा उदाहरण था जिस पर उन्हें विचार करना चाहिए था। चाहे कुरिन्थुस वासी इसमें न्यायसंगत थे कि उन्हें अन्यजाति-मूर्तिपूजक धार्मिक अनुष्ठानों में सम्मिलित होने का अधिकार है (एक ऐसी रियायत जो पौलुस ने उन्हें नहीं दी थी), प्रेरित ने उन्हें ऐसा न करने के कारण दिए।

आयत 7. कलीसिया के खर्चे पर अपने खाना-पीना प्राप्त करने के अधिकार के दावे को और दृढ़ करने के लिए, पौलुस ने तीन और प्रश्न पूछे। तीनों ही आलंकारिक हैं, जिनके उत्तर स्वयं-विदित हैं कि "कोई नहीं"। प्रत्यक्षतः, जो **सिपाही** को किराए पर **लेते** थे वे अपनी ओर से देते भी थे। प्रत्येक किसान अपनी

दाख की बारी के फल को खाता था। स्वाभाविक था कि भेड़ों की रखवाली करने वाला चरवाहा **उनका दूध पीता था।** सिपाही, किसान, और भेड़ों का चरवाहा अपने परिश्रम की बुनियादी सामग्री की आशा रख सकते थे।

जबकि शब्द "गिरह" (ὀψώνια, *ओप्सोनीया*) का प्रयोग बहुधा मेहनताने के अर्थ से होता था, पौलुस ने सामान्य परिभाषा को विस्तृत किया। सिपाही की आवश्यकताओं में अस्त्र-शास्त्र, भोजन, जूते, कपड़े, और तम्बू सम्मिलित थे। पौलुस के दृष्टिकोण से, जो लोग परमेश्वर के राज्य में परिश्रम कर रहे थे उनकी समानता कार्य पर लगे हुए सिपाही, दाख की बारी की देखभाल करने वाले किसान, या भेड़ों की रखवाली करने वाले चरवाहे से थी। उन्हें भौतिक सहायता से वंचित रखना अनुचित था।

यद्यपि उसे पूरा अधिकार था कि वह मेहनताना ले जिससे उसका परिश्रम आगे बढ़ सके, परन्तु सिपाही, किसान, चरवाहे के अपने उदाहरणों के विपरीत, पौलुस ने कुछ भी लेने से मना कर दिया। जो महत्वपूर्ण कार्य परमेश्वर ने उसे करने को दिया था, अपनी आवश्यकताओं के लिए परिश्रम करने में उस कार्य से उसका ध्यान बंटता था। प्रेरित ने अपने अधिकारों का बचाव किया, परन्तु उसने इसके बाद यह भी दिखाया कि उसने उन अधिकारों को प्राप्त करने पर दृढ़ रहने से मना भी किया। उसने कुरिन्थियों की कलीसिया के साथ के अपने संबंध का यह आंकलन किया कि उनसे आर्थिक सहायता स्वीकार करने से उसके आत्मिक नेतृत्व में बाधा होगी। प्रेरित के विचारों में यह शिक्षा निहित थी कि कुरिन्थियों को मूर्ति के मंदिर से खाने के लिए मसीही स्वतंत्रता को बहाना नहीं बनाना चाहिए। उन्हें किसी अधिकार की इस प्रकार माँग नहीं रखनी चाहिए कि उससे मसीही सन्देश के साथ कोई समझौता हो।

युक्ति के प्रति आग्रह करने के द्वारा, पौलुस ने दिखाया कि जो सुसमाचार का प्रचार करते हैं, उन्हें अधिकार है कि वे कलीसिया से अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति की आशा रखें। कुरिन्थुस के मसीही उस सन्देश के द्वारा बचाए गए थे जो उन्होंने सुना था, और वे उस जीवन शैली से आशीषित हुए थे जो परमेश्वर ने उन्हें प्रदान की थी। क्योंकि उन्हें मुफ्त में मिला था, इसलिए उन्हें सुसमाचार के प्रचार में सहायता करने के लिए तत्पर होना चाहिए था, जिससे और लोग भी उस बहुतायत में सम्मिलित हों जो उन्हें प्राप्त हुई थी।

जैसे ही प्रेरित ने बलपूर्वक तर्क दिया कि जो सुसमाचार प्रचार करते हैं उन्हें सुसमाचार के द्वारा जीवित भी रहना चाहिए, तो मूर्तिपूजा, स्वतंत्रता, और मूर्ति के मंदिर से भोजन खाने संबंधी प्रश्न पृष्ठभूमि में मंद हो गए। प्रेरित के लिए कलीसिया से धन प्राप्त करने का अधिकार उसके लिए महत्वपूर्ण था, साथ ही धन को अस्वीकार करने का भी। कुरिन्थुस की कलीसिया इस बात से अवगत होगी कि ऐसा क्या हुआ जिसके कारण उसने उन से कुछ भी लेने से मना कर दिया। लेख इसकी कभी व्याख्या नहीं करता है कि वह क्या था, परन्तु उसका इस जगह पर बल देना, इस सिद्धांत के प्रति उसके महत्व की साक्षी देता है।

बलपूर्वक यह प्रचार करने के पश्चात कि जो प्रचार करें उन्हें कलीसिया से

सहायता स्वीकार करना उचित है, प्रेरित पवित्रशास्त्र से आधिकारिक प्रमाणों की ओर मुड़ा। परमेश्वर ने यह स्पष्ट किया कि उसकी आशा थी कि जो सुसमाचार का प्रचार करते हैं वे सुसमाचार की शिक्षा से जीवित भी रहें।

अपने परिश्रम से लाभान्वित होना (9:8-14)

**[8]क्या मैं ये बातें मनुष्य ही की रीति पर बोलता हूं? [9]क्या व्यवस्था भी यही नहीं कहती? क्योंकि मूसा की व्यवस्था में लिखा है, "दावते समय बैल का मुंह न बान्धना।" क्या परमेश्वर बैलों ही की चिन्ता करता है? [10]या विशेष करके हमारे लिये कहता है। हां, हमारे लिये ही लिखा गया, क्योंकि उचित है, कि जोतने वाला आशा से जोते, और दावने वाला भागी होने की आशा से दावनी करे।
[11]अतः जब कि हम ने तुम्हारे लिये आत्मिक वस्तुएं बोईं, तो क्या यह कोई बड़ी बात है, कि तुम्हारी शारीरिक वस्तुओं की फसल काटें। [12]जब दूसरों का तुम पर यह अधिकार है, तो क्या हमारा इस से अधिक न होगा? परन्तु हम यह अधिकार काम में नहीं लाए; परन्तु सब कुछ सहते हैं, कि हमारे द्वारा मसीह के सुसमाचार की कुछ रुकावट न हो। [13]क्या तुम नहीं जानते कि जो मंदिर में सेवा करते हैं, वे मन्दिर में से खाते हैं; और जो वेदी की सेवा करते हैं; वे वेदी के साथ भागी होते हैं? [14]इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया, कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उन की जीविका सुसमाचार से हो।**

पौलुस द्वारा 9:8-10 में दावने वाले बैल के उदाहरण से सुसमाचार प्रचार करने वालों को अपने परिश्रम के अधिकार को लेने का तर्क देने का आंकलन करने के लिए संदर्भ पर विचार करना होगा। प्रेरित ने जो लिखा वह 8:1 के वाक्यांश "अब मूरतों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के विषय" से संबंधित प्रश्नों से तात्पर्य रखता है। पौलुस ने यह ठान करके रखा कि मूर्ति के मंदिर में अर्पित किए हुए भोजन को खाना, उन अनुष्ठानों के साथ जुड़ना था जिन के द्वारा वह भोजन मूर्ति को अर्पित होता था और मूर्तिपूजा था। कितना भी ज्ञान या कोई भी मानसिक पूर्वधारणा इसे बदल नहीं सकती थी। जो फिर भी नहीं माने, उन ज्ञानवानों को प्रेरित ने स्मरण कराया कि उनके उदाहरण उन लोगों के लिए विनाशकारी हो सकते हैं जिनमें बाहरी रूप से किए गए कार्यों और मानसिक पूर्वधारणा के साथ किए गए कार्यों में भेद करने की उचित समझ नहीं है। उनका ज्ञान दुर्बलों को नाश कर देता।

पौलुस ने अपनी शिक्षा को अपने ही उदाहरण के द्वारा और दृढ़ किया। यद्यपि कुरिन्थुस के मसीहियों पर मूर्तियों के मंदिर के भोजन को खाने के लिए, प्रेरित पर इस संबंध में दिए गए दबाव से अधिक दबाव था, तो भी उसने ऐसी ही अन्य परिस्थितियों का सामना किया था जहाँ उसे औरों के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना पड़ा था। इनमें से प्रमुख था उसका कुरिन्थुस की कलीसिया से आर्थिक सहायता को अस्वीकार करना, चाहे ऐसा करना भली-

भांति उसके अधिकारों में आता था। अनुभव और पवित्रशास्त्र उसके तर्क का समर्थन करते थे।

पौलुस ने दांवते हुए बैल के मुंह को बाँधने का उदाहरण पशुओं पर क्रूरता के संबंध में बात कहने के लिए नहीं दिया था। वह उसे "कम से अधिक" प्रकार के तर्क के लिए प्रयोग कर रहा था।

आयत 8. पौलुस ने बहुधा **व्यवस्था** के संबंध में यह दिखाने के लिए लिखा था कि मसीह का सुसमाचार "व्यवस्था" से आगे जा चुका था, क्योंकि मसीह ने उसे पूरा कर के हटा दिया था (कुलु. 2:14)। प्रेरित विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाए जाने की आशीषों को "व्यवस्था के श्राप" के साथ रखने से बिलकुल नहीं हिचकिचाया (गला. 3:13)। जो भी मसीही, धर्मी होने के लिए व्यवस्था का सहारा लेता, वह "अनुग्रह से गिर गया" (गला. 5:4) था। साथ ही पौलुस ने व्यवस्था को पवित्र भी कहा (रोम. 7:12)। कुछ परिस्थितियों में उसने व्यवस्था के द्वारा मसीही सिद्धांतों को सहारा दिया, और कुछ अन्य में उसने उसकी उन मांगों को बिलकुल अस्वीकृत कर दिया जो केवल यहूदियों पर लागू होती थीं। वर्तमान विषय में, व्यवस्था में दिए गए सिद्धांत पौलुस की शिक्षाओं का समर्थन करते थे कि कलीसिया को अपने सेवकों की आर्थिक सहायता उपलब्ध करवानी चाहिए। इससे आगे, पौलुस ने दैनिक दिनचर्या के उदाहरणों पर ध्यान किया जो उसकी बात की पुष्टि करते थे।

आयतें 9, 10. जो 9:9 का उद्धरण है वह व्यवस्थाविवरण 25:4 से लिया गया है। निःसहाय और आवश्यकताओं में पड़े लोगों के लिए संसाधनों के अतिरिक्त, मूसा की व्यवस्था पशुओं के प्रति दयालु बर्ताव मांगती थी। व्यवस्था में लिखा है **"दावने में चलते हुए बैल का मुंह न बान्धना"** ("दांव कर दाने निकालने वाले"; NIV), क्योंकि ऐसा करना परमेश्वर द्वारा स्वाभाविक संसार में रची गई शालीनता का उल्लंघन करता। व्यवस्था के अन्य आदेश पशुओं की देखभाल के लिए कहते थे। उदाहरण के लिए इस्राएली को पक्षियों के पूरे परिवार को नहीं मार देना था (व्यव. 22:6, 7); और यदि कोई किसी बोझा उठाने वाले पशु को "बोझ के मारे दबा हुआ देखे", तो उसे उस पशु को बचाना था, चाहे वह उसके शत्रु का ही क्यों न हो (निर्गमन 23:5)। व्यवस्था पशुओं के प्रति चिंता दिखाती थी, परन्तु पौलुस शीघ्र ही अपने लोगों के प्रति परमेश्वर की चिंता की ओर मुड़ा। उसने पूछा, **क्या परमेश्वर बैलों ही की चिंता करता है?** उसके प्रश्न का सही उत्तर है "हाँ, परमेश्वर बैलों की चिंता करता *है*, परन्तु वह लोगों की चिंता *अधिक* करता है।" बैल के मुंह को बाँधने के विरुद्ध आज्ञा को पौलुस ने और अधिक विस्तृत किया। उसने इसे लोगों के अपने परिश्रम के फलों में संभागी होने के अधिकारों से संबंधित एक रूपक अलंकारिक कथन के समान प्रस्तुत किया, यद्यपि व्यवस्थाविवरण में यह खण्ड पशुओं के प्रति दयालु व्यवहार से अधिक और कुछ नहीं सिखाता है।

पौलुस ने पूछा, **या विशेष कर के हमारे लिये कहता है?** जो शब्द NASB में "विशेषकर" अनुवाद हुआ है उसका और अच्छा अनुवाद "अवश्य ही" होता। बैल

के प्रति सही व्यवहार को लेकर परमेश्वर की जो भी चिंता रही हो, वह लोगों के प्रति अधिक चिंतित रहता है। यह सिद्धांत कि बैल को अपने परिश्रम के फल में संभागी होना चाहिए "अवश्य ही" मनुष्यों पर लागू होता है।

बिना मुंह बंधे हुए बैल के समान ही वह **जोतने वाला** है **जो आशा से जोतता है** और वह **दावने वाला** जो **भागी होने की आशा से** दावनी करता है। यदि दावने वाले बैल को अपने परिश्रम से लाभान्वित होना है, तो उस मनुष्य को कितना और भी अधिक अपने परिश्रम के प्रतिफल की आशा रखनी है जो दांव और जोत रहा है!

इन उदाहरणों का प्रयोग करने के पश्चात, पौलुस ने बल दिया कि जो सुसमाचार सिखाने के लिए परिश्रम कर रहा है वह उनके, जिनकी उसने सेवा की है, भौतिक लाभों में संभागी हो। अन्य लोगों के साथ, पौलुस को ऐसी सहायता लेने का अधिकार था। प्रत्यक्षतः उसने अपना यह अधिकार इस लिए छोड़ दिया था क्योंकि उसका मानना था कि उसे स्वीकार करने से कुछ भाइयों का विश्वास अस्तव्यस्त हो जाएगा। कुरिन्थियों को, उनकी चिंता करने के द्वारा जो उनमें से विश्वास में दुर्बल थे, उसके इस उदाहरण का अनुसरण करना था। चाहे पौलुस यह मान भी लेता कि मानसिक पूर्वधारणा द्वारा मूर्तिपूजा स्वीकारयोग्य व्यवहार बन जाता - किंतु उसने ऐसा नहीं किया था - ज्ञानवान मसीहियों को उनके लिए जो उनसे दुर्बल थे इस व्यवहार को छोड़ देना चाहिए था।

आयत 11. पौलुस 9:8-14 में कुरिन्थियों से धन लेने का इनकार करने के स्पष्टीकरण देने के इतना निकट आया जितना और कहीं नहीं आया। प्रतीत होता है कि कुरिन्थुस में कुछ मानते थे कि जो **शारीरिक वस्तुएँ** (τὰ σαρκικὰ, *टा सरकिका*) पौलुस पाने की आशा रखता था उनका देना **बड़ी बात** है। इससे प्रगट रूप से वह उन यात्री दार्शनिक प्रचारकों के समान लग सकता था जो कुरिन्थुस में नियमित देखे जा सकते थे। ये स्वयं नियुक्त उपदेशक सदा ही पारिश्रमिक की आशा करते थे, चाहे उनकी शिक्षाएँ कितनी भी व्यर्थ क्यों न हों। निःसंदेह प्रेरित उनके साथ तुलना किए जाने से रुष्ट हुआ और निर्णय लिया कि आर्थिक सहायता मिलने को वह सुसमाचार प्रचार में बाधा नहीं बनाने देगा। वह उन संसाधनों से संतुष्ट था जो अन्य कलीसियाएं उसे उपलब्ध करवा देती थीं, या फिर आवश्यकता पड़ने पर, वह स्वयं अपनी व्यक्तिगत आमदनी के लिए परिश्रम कर लेता था। उसके इस निर्णय ने उन आलोचकों के मुँह बन्द कर दिए जो उसे किराए के उपदेशकों के समान देखते थे, परन्तु इससे कुरिन्थुस में औरों को ठेस पहुँची। उन्होंने अपमानित अनुभव किया कि वह अन्य मसीहियों से तो सहायता ले लेता था (2 कुरि. 11:8) किंतु उनकी सहायता को ठुकरा देता था।

पौलुस ने कुरिन्थुस के विश्वासियों में **आत्मिक वस्तुएँ** (τὰ πνευματικὰ, *टा न्युमाटिका*) बोईं थीं, जब उसने उन्हें परमेश्वर का वचन सुनाया (देखें लूका 8:11; प्रेरितों 18:4)। वह यूनानियों को उभार रहा था कि एकमात्र परमेश्वर ही सृष्टिकर्ता है जिसने सभी जातियों के लोगों के छुटकारे की तैयारी में अपने आप

को यहूदियों के पुरखाओं पर प्रकट किया। इसका तात्पर्य था कि यूनानी मंदिर, जो उनकी सभ्यता के प्रतीक थे, काल्पनिक देवी-देवताओं को आदर देने के लिए बनाए गए थे। उनके लिए यह स्वीकार करने को कड़वा सच था। यूनानियों को एक रीति से कायल करना था और यहूदियों को अन्य रीति से सिखाना था। पौलुस यहूदियों को कायल कर रहा था कि जिस मसीहा की वे आशा लगाए हुए थे वह आ गया था - नासरत का यीशु उनका उद्धारकर्ता था, किंतु दाऊद के समान योद्धा नहीं था। यह अनिवार्य था कि "मसीह दुःख उठाए ... अपनी महिमा में प्रवेश करे" (लूका 24:26; देखें प्रेरितों 17:3)। पौलुस ने परमेश्वर के अनुग्रह और पहल का सन्देश बोया। पाप, अनाज्ञाकारिता, और मृत्यु से पलट कर अनेकों ने विश्वास द्वारा उसका प्रत्युत्तर दिया। कुरिन्थुस में बहुत से "सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया" (प्रेरितों 18:8)। जो भी "शारीरिक वस्तुएँ" (1 कुरि. 9:11) इन मसीहियों द्वारा प्रेरित को दी जातीं वे उन बहुतायत की आशीषों के समक्ष जो उसके द्वारा उन्हें मिली थीं, बहुत कम पारिश्रमिक होता।

आयत 12. सिद्धांत के लिए पौलुस का तर्क, उसके शत्रुओं द्वारा उसकी प्रेरिताई पर लगाए गए व्यक्तिगत लांछनों के प्रत्युत्तर के साथ मिश्रित था। वह अपनी बात **यह अधिकार** की पुनःपुष्टि के लिए नहीं कर रहा था। यह विषय बन्द कर दिया गया था (9:15); वह कुरिन्थुस के भाइयों से आर्थिक सहायता नहीं लेगा। पौलुस **मसीह के सुसमाचार की कुछ रोक** करना नहीं चाहता था, चाहे उसके पास आर्थिक सहायता लेने का औरों के समान अधिकार था। प्रेरित के इस दावे ने कि हम यह अधिकार **काम में नहीं लाए** उसके आग्रह की पुष्टि की, कि अधिकारों का दावा करना विश्वास में दुर्बलों को प्रोत्साहित करने से कम महत्वपूर्ण है।

जब प्रेरित ने जताया कि **औरों का तुम पर यह अधिकार है**, तो यह स्पष्ट नहीं है कि "औरों" से उसका तात्पर्य किन लोगों के प्रति था। क्या वह कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के बारे में विचार कर रहा था जिन्हें कुरिन्थियों ने आर्थिक सहायता प्रदान की थी? अपुल्लोस ऐसा व्यक्ति हो सकता था (3:5, 6), परन्तु संभवतः वह शहर में अधिक समय तक नहीं रहा था (16:12)। पौलुस एक ऐसे सिद्धांत का बचाव करने की बेढंगी स्थिति में था, जिसे वह स्वयं अपने ऊपर लागू नहीं कर रहा था। कहने को तो कुरिन्थी किसी की भी, जो उनमें मसीह का प्रचार करता, सहायता कर सकते थे। उनके लिए, जो यह तर्क देते थे कि उसके द्वारा आर्थिक सहायता लेने का इनकार करने से उसके प्रेरित होने के दर्जे से समझौता हुआ है, उसने अपनी स्थिति फिर से स्पष्ट की। उसने कुरिन्थियों से सहायता लेने से इसलिए मना किया क्योंकि वह अपने द्वारा प्रचार किए गए सुसमाचार की कोई हानि नहीं चाहता था।

पौलुस ने ऐसा क्यों सोचा कि कुरिन्थियों से आर्थिक सहायता लेने से उसके प्रयासों में समझौता हो जाएगा? प्रेरित ने इसका कोई विवरण नहीं दिया। संभवतः प्रेरित और कुरिन्थियों की कलीसिया के कुछ लोगों के मध्य में, जो यह आरोप लगाते थे कि पौलुस अपने स्थान का प्रयोग व्यक्तिगत लाभ उठाने के लिए

कर सकता है, कुछ विषय उठ खड़े हुए होंगे। इन आरोपों से हर कोई तो सहमत नहीं रहा होगा, परन्तु हो सकता है कि वे सामान्यतः सब को पता रहे हों। इस बात पर दृढ़ कि कोई उस पर सुसमाचार सन्देश का उपयोग आर्थिक लाभ कमाने के लिए प्रयोग करने का आरोप ना गढ़ने पाए, पौलुस ने निर्णय लिया कि वह **सब कुछ सह** लेगा न कि उसकी व्यक्तिगत आवश्यकताएं उन आत्माओं के आड़े आएँ जो मसीह के लिए जीती जा सकती थीं।

इस सब के होते हुए भी, प्रेरित की आशा रही होगी कि कलीसिया कुछ सीमित बातों में उसकी सहायता करे। उसने 16:6 में कुरिन्थुस में शरद ऋतु बिताने की योजना के बारे में लिखा। उसने आगे लिखा कि अपने ठहरने के बाद "जिस ओर मेरा जाना हो, उस ओर तुम मुझे पहुंचा दो" (16:6; देखें 2 कुरि. 1:16)। अन्य स्थानों पर "तुम मुझे पहुंचा दो" उसके द्वारा भाइयों को स्मरण दिलाने की नम्र विधि है कि उसे आर्थिक सहायता की आवश्यकता है (देखें रोम. 15:24)। पौलुस शहर के बाहर उसकी सेवकाई के लिए कुरिन्थुस से सहायता लेने को तैयार हो सकता था, परन्तु शहर के अन्दर अपने कार्य के लिए उसने सहायता लेने से मना कर दिया था।

आयत 13. अपने प्रमाण और विचार 9:12 में समाप्त करने के पश्चात लगता है कि प्रेरित फिर से मुड़कर उन्हीं बातों को कहने लगा। उसके 9:13, 14 के तर्क 9:8, 9 के बाद भली-भांति बैठ जाते। पौलुस ने संभवतः उन्हें यहाँ इसलिए रखा कि इन विचारों को अध्याय के मूर्तिपूजा को समर्पित मंदिरों के भोजन खाने के 8 साथ फिर से जोड़ सके।वस्तुतः उसके पासे किसी अन्य से अधिक अधिकार था। उसके द्वारा कुरिन्थियों की कलीसिया से आर्थिक सहायता लेने से इनकार करना उसके उस वृहद तर्क का सहायक हुआ जिसे वह दे रहा था कि समझदार मसीहियों को मसीह की आत्मा में कार्य करना चाहिए और अपने से दुर्बल और कम समझदार लोगों के विश्वास की रक्षा के लिए अपने अधिकारों को छोड़ देना चाहिए।

कुरिन्थुस की यूनानी विचारधारा के अनुसार, **जो पवित्र वस्तुओं की सेवा करते हैं** संभवतः वेदियों पर बलिदानों की विधियों के प्रभारी पुजारियों के लिए आया है, वे चाहे अन्यजाति-मूर्तिपूजक हों या यहूदी। यूनानी शहरों के पंथों में, यहूदियों के हारून और सदोक के समान, विशेषतया कोई पैतृक या व्यावसायिक पुजारीगण नहीं होते थे। यूनानी शहरों में पुजारी चुनाव, नियुक्ति, या क्रय के द्वारा बनते थे।[5] यूनानियों के लिए पुजारी होना किसी भी अन्य आधिकारिक पद पर सेवा करने के समान था; इस पद के साथ विशेषाधिकार और आर्थिक लाभ जुड़े हुए थे।

पौलुस ने पुजारियों के महत्वपूर्ण विशेषाधिकारों की ओर ध्यान खींचा: उन्हें बलिदानों में से अपने खाने के लिए भाग मिलते थे। प्रेरित ने इस सामान्य विदित ज्ञान की भी बात की, कि जो पवित्र सेवाएं करते हैं वे **मन्दिर में से खाते हैं**। सुसमाचार प्रचारक और पुजारी के कार्यों में बनाया गया समानान्तर बिलकुल सही तो नहीं था, परन्तु उससे जो बात प्रेरित कहना चाह रहा था वह प्रगट हो

जाती थी।

आयत 14. यहूदियों और अन्यजाति-मूर्तिपूजकों में सामान्यतः स्वीकार की जाने वाली पद्धति थी कि जो उपासना करने वालों की सेवा करते थे वे वेदी की भौतिक सामग्री के भागी होते थे। यही सिद्धांत मसीही सेवकाई पर भी लागू होता था। यद्यपि सुसमाचार प्रचारक के काम और जो पारिश्रमिक उसे मिलता था वह वेदियों पर सेवा करने वाले पुजारियों के समान तो नहीं था, परन्तु वही सिद्धांत दोनों पर लागू होता था। चाहे समानता सटीक न भी हो, तो भी प्रभु के स्पष्ट कथन ने संदेह के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ा: **इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया, कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उन की जीविका सुसमाचार से हो।** पौलुस का यह उद्धरण प्रभु का ऐसा कथन हो सकता है जो सुसमाचार लेखों में दर्ज नहीं किया गया, या, वह उस कथन का अनुकूलन हो सकता है जो प्रभु ने बारहों को इस्राएल के भटके हुओं में भेजते समय कहा था: "जिस किसी नगर या गांव में जाओ तो पता लगाओ कि वहां कौन योग्य है और जब तक वहां से न निकलो, उसी के यहां रहो" (मत्ती 10:11)।

जबकि कलीसिया में कोई व्यावसायिक या पैतृक पुजारीगण नहीं हैं, उसके सदस्य उनके जीवनों से लाभान्वित होते हैं जिन्होंने अपने जीवन शिक्षा, उपदेश, और देह की उन्नति के लिए समर्पित किए हैं। यहाँ लागू सिद्धांत स्पष्ट है: जिनका पूरा जीवन के लिए सेवा के लिए समर्पित है, उनकी सहायता उन कलीसियाओं से होनी चाहिए जिनमें वे सेवा करते हैं (देखें गला. 6:6)।

एक प्रश्न उठता है। यदि "प्रभु ने भी ठहराया, कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उन की जीविका सुसमाचार से हो", तो क्या ऐसा पारिश्रमिक प्रचारक या मंडली के लिए वैकल्पिक माना जा सकता है? पौलुस ने किस अधिकार से यह लिखा कि "परन्तु हम यह अधिकार काम में नहीं लाए; परन्तु सब कुछ सहते हैं" (9:12)? क्या जो प्रभु ने निर्देश दिया था उसे करने के लिए वह बाध्य नहीं था? गारलैंड ने इस प्रश्न के प्रति इस प्रकार प्रतिक्रिया दी: "पौलुस ने इसे यह नहीं समझा कि वह प्रभु द्वारा दिए गए निर्देश की अवज्ञा कर रहा है [जब उसने शारीरिक सहायता लेने से माना किया] वरन उसे स्वीकार करने या मना करने के अधिकार के रूप में लिया।"[6] सम्पूर्णता सेवा में लगे हुए सेवक को उनसे शारीरिक सहायता लेने का अधिकार है जिनमें वह सेवा करता है, परन्तु वह इस विषय पर बाध्य नहीं है। यदि पौलुस का सहायता स्वीकार करना उसके उद्देश्य में बाधा ला सकता था, तो वह उसे मना कर सकता था।

अच्छा भंडारी होना (9:15-18)

[15]परन्तु मैं इन में से कोई भी बात काम में न लाया, और मैं ने ये बातें इसलिये नहीं लिखीं, कि मेरे लिये ऐसा किया जाए, क्योंकि इस से तो मेरा मरना ही भला है; कि कोई मेरे घमण्ड को व्यर्थ ठहराए। [16]यदि मैं सुसमाचार सुनाऊं, तो मेरे लिए कुछ घमण्ड की बात नहीं; क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य

है; और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं, तो मुझ पर हाय। [17]क्योंकि यदि अपनी इच्छा से यह करता हूं, तो मज़दूरी मुझे मिलती है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता, तौभी भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है। [18]तो मेरी कौन सी मज़दूरी है? यह कि सुसमाचार सुनाने में मैं मसीह का सुसमाचार सेंत मेंत कर दूं; यहां तक कि सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है, उसको भी मैं पूरी रीति से काम में न लाऊं।

कुरिन्थुस की विशिष्ट परिस्थितियों और कलीसिया से उसके संबंध को देखते हुए, पौलुस को यह बुद्धिमतापूर्ण लगा कि वह वहाँ की कलीसिया से "शारीरिक वस्तुओं" को लेने से मना करे। तो फिर उसने कुरिन्थुस की कलीसिया की आत्मिक भलाई औरों के हाथों में क्यों नहीं छोड़ दी? पौलुस को अपने निर्णय को समझाने की आवश्यकता अनुभव हुई।

मसीह के किसी भी अन्य विश्वासयोग्य सेवक के समान, पौलुस को यह अधिकार (और दायित्व) प्रदान किया गया था कि वह पूर्णतयाः कलीसिया के लिए कार्य करने के कारण अपने परिश्रम का पारिश्रमिक स्वीकार करे (9:7)। परन्तु मसीही सेवक को दिया जाने वाला पारिश्रमिक उतना नहीं है जितना किसी बढ़ई या कार्यशाला में कार्य करने वाले को मिलता है। एक सुसमाचार प्रचारक, जब आवश्यक हो तब अपनी सहायता के लिए सांसारिक कार्य कर सकता है, परन्तु वह परमेश्वर के राज्य में कार्यकर्ता होने से कभी नहीं हटता है। मनुष्यों की आत्माओं के लिए उसकी प्यास कभी उसके पारिश्रमिक के अनुपात में कम या अधिक नहीं होती है। पौलुस के लिए प्रचार करना विकल्प नहीं अनिवार्यता था। प्रभु ने उसे एक भंडारीपन सौंपा था।

नासरत के यीशु की ओर मुड़ने पर, पौलुस ने अपने आप को यीशु द्वारा छोड़े गए आदर्शों का पालन करने के लिए समर्पित कर दिया था (यूहन्ना 13:14, 15)। यीशु की सहायता के लिए औरों ने योगदान दिया था (लूका 8:3), जैसे कि पौलुस की सहायता के लिए भी औरों ने योगदान दिया था (2 कुरि. 11:8, 9); परन्तु दोनों में से कोई भी सेवकाई पारिश्रमिक पर निर्भर नहीं थी। यीशु का होने के लिए पौलुस "सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना" (1 कुरि. 9:22)। ऐसा करने से उसने मसीह के लिए कुछ आत्माएं पाईं। अन्य-जातियों के लिए नियुक्त प्रेरित के लिए इतना पारिश्रमिक भी उपयुक्त था।

आयत 15. पौलुस ने कुरिन्थियों से आर्थिक सहायता न लेने के अपने कारण स्पष्ट कर दिए थे। ऐसा करने से "मसीह के सुसमाचार की कुछ रोक" हो सकती थी (9:12)। उसके मना करने के बाद भी कुरिन्थुस के कुछ संदेह करने वालों ने कहा होगा, "उसे धन देकर देखो कि वह मना करता है कि नहीं।" उन्होंने कुरिन्थुस में दार्शनिकों को देखा था। यद्यपि पौलुस का सन्देश वैसा स्वार्थ-सिद्धि वाला नहीं था जैसा उन अन्यों का होता था जिन्हें वे सुन चुके थे, किंतु इन आलोचकों ने पौलुस को उन कपटियों के समान देखा होगा जो अपने ही सन्देश को फैलाने के लिए आते थे। प्रेरित उसके विरुद्ध लगाए जा रहे आरोपों और

संदेहों से अवगत था। जिनको उसके शब्दों से कुरिन्थियों में हेराफेरी करने की संभावना दिखाई देती थी, उन्हें पौलुस ने आश्वस्त किया। उसके इस कथन, **मैं ने तो ये बातें इसलिये नहीं लिखीं, कि मेरे लिये ऐसा किया जाए**, में "मैं" (ἐγώ, *एगो*) पर बल दिया गया है।

पौलुस की कुरिन्थियों से धन लेने के अपने अधिकार का प्रयोग न करने के संबंध में की गई टिप्पणी, क्योंकि **इस से तो मेरा मरना ही भला है**, चरम सीमा की है। क्या उसके लिए कुरिन्थियों से धन स्वीकार न करना इतना महत्वपूर्ण था? क्या पौलुस का अहम उससे उसकी बुद्धिमता से निर्णय लेने को चुरा रहा था? उसके द्वारा प्रयुक्त वाक्यांश **मेरा घमण्ड** इस अनिश्चितता को और बढ़ाता है। वर्तमान भाषा में, "घमण्ड" से उद्दण्डता का, अपने कौशल, योग्यताओं, या प्रभाव के प्रति बड़ी चाह के साथ निहारते रहने का सुझाव आता है। वह जो घमण्ड करता है, उसकी इच्छा होती है कि और लोग जानें कि उसके पास, किसी प्रकार से, उन से कुछ अधिक है। किंतु अंग्रेज़ी शब्द "घमण्ड" में कुछ नकारात्मक अभिप्राय हैं, जिनका यूनानी शब्द (καύχημα, कॉखेमा) में होना आवश्यक नहीं है। यूनानी शब्द में कुछ भले अभिप्राय थे, अर्थात "स्वाभिमान" के समान कुछ। आज के समान तब भी डींग मारने वालों को नीची दृष्टि से देखा जाता था; परन्तु यूनानी वक्ता अपने शिष्यों को सिखाते थे कि कैसे आदर प्राप्त करने के लिए अपनी संपत्ति, सामाजिक सेवा, और विरासत का प्रदर्शन तो करें,[7] किंतु अपने घमण्ड में कोमलता के साथ।

जब पौलुस ने कहा **कि कोई** मेरा घमण्ड **व्यर्थ ठहराए**, इसके स्थान पर वह मरना पसंद करेगा, तब उसकी व्यक्तिगत भावनाएँ ही एकमात्र विषय नहीं था। मसीह के कार्य को किसी प्रकार की हानि पहुँचाने से तो वह मर जाना पसंद करता था (9:12)। पौलुस का यात्री दार्शनिकों के साथ तुलना किए जाने के कारण रुष्ट होना और यह इच्छा कि लोग सुसमाचार ग्रहण करें परस्पर गुथे हुए थे। प्रेरित जानता था कि लोग जो उसके बारे में सोचते हैं वह क्रूस के सन्देश को सुनने और मानने की उनकी इच्छा को प्रभावित करेगा।

आयात 16. प्रेरित द्वारा मसीह का प्रचार उसे घमण्ड करने का कोई अवसर नहीं देता था। उसने कहा, **यदि मैं सुसमाचार सुनाऊं, तो मेरा लिए कुछ घमण्ड की बात नहीं; क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य है।** क्योंकि पौलुस के लिए प्रचार करना "अवश्य" था, इसलिए उसका बिना पारिश्रमिक लिए प्रचार करना ही उसका स्वाभिमान था। उसके द्वारा सहायता को अस्वीकार करना उसका व्यक्तिगत निर्णय था जो उसके स्वाभिमान और शहर के मसीहियों के बीच उसके आदर से संबंधित था।

पौलुस जानता था कि जो भरोसा भाइयों का सुसमाचार में था वह उनके उसमें रखे गए भरोसे से जुड़ा हुआ था। प्रचार करना विकल्प नहीं था, न ही घमण्ड का विषय था। उसने कहा, **यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं, तो मुझ पर हाय।** मसीह के द्वारा उसका बुलाया जाना और मसीह ने जो कलीसिया को उद्देश्य दिया था वे उसे प्रचार करने को तो बाध्य करते थे, परन्तु उसे धन,

जिससे उस पर आरोप आएँ, लेने के लिए बाध्य नहीं करते थे।

आयतें 17, 18. पौलुस के "घमण्ड" का कारण और उसका **अपनी इच्छा** से प्रचार करना परस्पर संबंधित हैं। उसका बिना पारिश्रमिक लिए प्रचार करना उसे **मज़दूरी मुझे मिलती है** कहने की अनुमति दे सका। उसकी मज़दूरी थी कि वह कुरिन्थुस के अपने कपटी आलोचकों के सामने प्रमाण सहित खड़ा हो सका कि उसके उद्देश्य निष्कपट थे। उसकी मज़दूरी वह आदर था जो वह इस बात से कम सका कि वह आर्थिक रीति से उनपर निर्भर नहीं था जिन्हें वह शिक्षा दे रहा था। उस मज़दूरी का, इस विषय में, क्रूस पर मसीह द्वारा क्रय किए गए उद्धार से कोई संबंध नहीं था। यह उसके तथा कुरिन्थियों के बीच का विषय था।

पौलुस के तर्क की सही समझ उसके द्वारा प्रयुक्त शब्द **इस** के पूर्ववर्ती शब्दों पर निर्भर था: वह "अपनी इच्छा से" क्या करने की बात कह रहा था? जिस शब्द का अनुवाद "अपनी इच्छा से" (ἑκών, *हेकोन*) हुआ है वह नए नियम में केवल यहाँ और रोमियों 8:20 में ही आता है। इसका विलोम, **अपनी इच्छा से नहीं** (ἄκων, *एकोन*) भी केवल यहीं प्रयुक्त हुआ है। प्रेरित ने अपनी इच्छा से क्या किया था? उसने मसीह का प्रचार किया था - परन्तु उसका प्रचार कुरिन्थियों से आर्थिक सहायता लेना अस्वीकार करने के साथ सम्मिलित था। "इस" उसके 9:16 में "अवश्य" प्रचार करने की बाध्यता से संबंधित है, उसे सुसमाचार फैलाना ही था क्योंकि उसने प्रेम के अंतर्गत अपने आप को मसीह को समर्पित कर दिया था। जैसे अभिभावक सन्तान के लिए उपलब्ध करवाते हैं क्योंकि अभिभावकों का प्रेम इसके अतिरिक्त और किसी बात की अनुमति नहीं देता है, वैसे ही पौलुस का प्रचार करना भी प्रेम के कारण अवश्य था।

उसके 9:17, 18 के अभिप्राय को भावानुवाद "यदि मैंने यह स्वेच्छा से किया है (जो मैंने नहीं किया), तो मैं मज़दूरी की आशा रख सकता हूँ। मैं मसीह से जैसा प्रेम रखता हूँ, उसके अंतर्गत मैं उसकी आज्ञाओं के पालन के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकता हूँ। यदि प्रचार करना मेरी जीविका होती, तो मैं **मज़दूरी** [μισθός, *मिस्थोस, 'मज़दूरी'*] की आशा रखता; परन्तु मेरी मज़दूरी तो मेरे प्रचार में ही निहित है" में देखा जा सकता है। कुरिन्थुस में पौलुस का कार्य, और उस कार्य के लिए उसके द्वारा मज़दूरी नहीं लेना, उसकी इच्छा के विरुद्ध इस तात्पर्य से थे क्योंकि वह मसीह का दास था। उसने उस स्वामी के प्रति, जिससे वह प्रेम करता था, कर्तव्य और आभार के कारण परिश्रम किया था। वह अपने हाथों में धन रखे जाने से अलग "मज़दूरी" चाह रहा था।

पौलुस की मज़दूरी, उसका घमण्ड, ऐसा था जिसे वह किसी मनुष्य को व्यर्थ करने नहीं देता। जहाँ तक कुरिन्थुस में उसके प्रचार की उसकी "अपनी इच्छा" (*हेकोन*)[8] पर निर्भरता थी, वह उसे **भण्डारीपन सौंपा गया** था। उसके भण्डारीपन के प्रति "विश्वासयोग्यता" की माँग थी कि वह कुरिन्थियों में प्रचार भी करे और उनसे मज़दूरी लेना भी अस्वीकार करे। उसकी सेवकाई उसकी अपनी पहल से नहीं थी; प्रभु ने एक भण्डारीपन उसे सौंपा था (देखें 4:1)। इस खण्ड की व्याख्या करने वालों को कठिनाई मज़दूरी और अनुग्रह में समन्वय

बैठाने को लेकर होती है। परन्तु आने वाले युग के अनुग्रह और प्रतिफल या दण्ड की महान परिकल्पनाएँ, कुरिन्थियों के मध्य उसकी मज़दूरी से संबंधित नहीं हैं।

अपनी चर्चा में घुमावदार मार्ग अपनाने के पश्चात, प्रेरित विचाराधीन विषय पर लौट कर आया: किसी महान भलाई के लिए मसीही अपने अधिकार को छोड़ना चुन सकते हैं। पौलुस के अपने उदाहरण ने इस विषय को दिखाया। उसका उसे सौंपे गए भण्डारीपन के अन्तर्गत कुरिन्थुस में प्रचार करने की मज़दूरी उसका स्वाभिमान था, उसका यह घमण्ड कि उसने कुरिन्थुस के लोगों को सुसमाचार **सेंत मेंत** कर दिया था। ऐसा करने में वह **सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है, उसको मैं पूरी रीति से काम में** नहीं लाया। एक बार फिर इसमें मसीहियों से उसका आग्रह निहित था कि वे अपनी समझ-बूझ में अत्यधिक घमण्ड न करें, परन्तु अपने अधिकारों को छोड़ें और अपने भाइयों के प्रति चिंता दिखाएँ।

सब का दास (9:19-23)

19क्योंकि सब से स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपने आप को सब का दास बना दिया है; कि अधिक लोगों को खींच लाऊं। 20मैं यहूदियों के लिये यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊं। जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उन के लिये मैं व्यवस्था के अधीन न होने पर भी व्यवस्था के अधीन बना, कि उन्हें जो व्यवस्था के अधीन हैं, खींच लाऊं। 21व्यवस्थाहीनों के लिये मैं - जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्था के आधीन हूं - व्यवस्थाहीन सा बना, कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊं। 22मैं निर्बलों के लिये निर्बल सा बना, कि निर्बलों को खींच लाऊं, मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना हूं, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं। 23और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूं, कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊं।

आयत 19. अपने आप को उदाहरण बनाने के पश्चात, पौलुस ने अपनी सेवकाई पर मनन आरंभ किया। संभवतः उसे आलोचना की प्रतीक्षा थी, या फिर हो सकता है कि आलोचना आरंभ हो गई थी। प्रेरित ने सिद्धांत पर दृढ़ रहने और स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति में भिन्नता को दिखाया। किसी के रोष का कारण हुए बिना, पौलुस ने कुरिन्थुस में कलीसिया से बिना कोई आर्थिक सहायता लिए प्रचार किया। यदि वह अपने अधिकारों के लिए दृढ़ रहता तो जो विश्वास में दुर्बल थे उनमें से कुछ मसीह से फिर जाते। **सब का दास** बनना चुनाव के द्वारा पौलुस ने और भी महान स्वतंत्रता को चुना।

इस स्थिति में पौलुस ने दुर्बल भाई का ध्यान किया जिससे **कि अधिक लोगों** (ἵνα, हिना) को मसीह के लिए **खींच लाए**। वह सदा इस प्रकार ध्यान देने का मार्ग नहीं चुनता था। जब गलतिया के अन्यजातियों से आए मसीही यहूदी रीतियों को अपनाने लगे थे तो पौलुस ने आज्ञा दी, “दासत्व के जूए में फिर से न

जुतो" (गला. 5:1)। वह इस बात में अडिग रहा, यद्यपि वह स्वयं भी (यहूदी होते हुए) कुछ प्रथाओं को मानता था (देखें प्रेरितों 16:3; 18:18; 21:26)। प्रेरित का व्यवहार स्मरण करवाता है कि एक ही आदर्श सभी के लिए सटीक नहीं होता है। जब कोई प्रश्न उठे, विश्वासियों को अपने आप को जाँचना चाहिए, बाइबल के उदाहरणों से अपनी प्रवृत्ति को जाँचना चाहिए, और भले विश्वास में होकर कार्य करना चाहिए। प्रभु के लिए प्रेम, उसे महिमा देने की लालसा, और खोए हुओं के प्रति प्रेम हमारा मार्गदर्शन करने वाली ज्योतियां होनी चाहिए।

आयत 20. पौलुस की, जो स्वयं एक यहूदी था, मानसिकता थी कि वह यहूदी और अन्यजाति में अंतर करे। परन्तु वह यह समझ चुका था कि यहूदी होने का यह अर्थ नहीं है कि परमेश्वर के साथ स्वतः ही अच्छा संबंध है। व्यवस्था का बड़ा भाग इस्राएलियों और परदेशी जातियों में भिन्नता से संबंधित था, परन्तु यह सदा ही नैतिक या धार्मिक बातों के बारे में नहीं होता था। कुछ नियम यहूदियों के लिए जातिगत पहचान चिन्ह थे। पौलुस यहूदी होने से प्रसन्न था; परन्तु वह यह समझता था कि यहूदी प्रथाएँ, वे भी जिनका व्यवस्था में विशेष उल्लेख था, समस्त मानवजाति के लिए परमेश्वर की इच्छा थी।

पौलुस द्वारा यहूदी प्रथाओं का पालन करना उचित होने के शीर्षक के अन्तर्गत आता था। यहूदियों में पहुँच बनाने के लिए, जब उचित लगा, वह उनके से भोजन को खाता और उनकी परंपराओं को मानता था। फिर उनमें पहुँच बनाने के बाद, वह उन्हें मसीह के बारे में सिखा सकता था और उन्हें उद्धार की ओर ले जा सकता था। **जो लोग व्यवस्था के आधीन हैं** का अर्थ है **यहूदी**। व्यवस्था का पालन करने वाले भोजन के विषय कड़े नियमों का पालन करते थे और खतना करवाते थे। पौलुस ने ध्यान दिलाया कि वह व्यवस्था की जातिगत बातों का पालन करने के लिए किसी प्रकार से बाध्य नहीं था। न ही कोई मसीही बाध्य है।

प्रेरित का प्रायः उदासीन भाव से स्वीकार करना कि वह "व्यवस्था के अधीन है" जो यह संकेत करता है कि जिन तीव्र समस्याओं को 2 कुरिन्थियों 3 में संबोधित किया गया है वे अभी तक नहीं उठी थीं। जब तक कि पौलुस ने 2 कुरिन्थियों लिखी, मण्डली के लोग अन्यों के प्रभाव में आ चुके थे। पौलुस ने मनुष्य के हृदयों की, पत्थर की पट्टियों से तुलना की, जिन पर जीवते परमेश्वर के वचन खोद कर लिखे गए थे (2 कुरि. 3:3)। उसने आत्मा के द्वारा दी गई जीवन की वाचा की तुलना "मृत्यु की वाचा" (2 कुरि. 3:7) से की।

आयत 21. मूसा को जो व्यवस्था दी गई थी, वही 9:20 की "व्यवस्था" है। जब पौलुस अन्यजातियों के साथ था, तो वह व्यवस्था की पारंपरिक विधियों पर कोई ध्यान नहीं देता था, परन्तु उसने कभी ऐसा व्यवहार भी नहीं किया जिससे लगे कि मसीह में होने का अर्थ है कि सभी नैतिक और आचार संबंधी प्रतिबन्ध हट गए हैं। अन्यजातियों की संगति में व्यवस्था की पारंपरिक विधियों की अवहेलना करने में उसका उद्देश्य था मसीह के लिए आत्माओं को जीतना। जब वह यहूदियों के साथ पारंपरिक विधियों का पालन करता था तब भी उसका

वही उद्देश्य होता था।

वाक्यांश **परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्था के आधीन हूं** से हरमन रिड्डरबोस ने कई तात्पर्य निकाले।[9] (1) मसीह की कलीसिया के सदस्यों के लिए व्यवस्था की कोई निशर्त वैधता नहीं है। पौलुस की प्रचार शिक्षाओं के साथ यहूदियों तथा अन्यजातियों में भेद करना मेल नहीं खाता है। (2) व्यवस्था में ऐसी शिक्षाएँ हैं जो मसीहियों के लिए लाभदायक हैं। इस खण्ड में "व्यवस्था" का अर्थ केवल वही हो सकता है जो पौलुस के लेखों में सदा ही "व्यवस्था" का अर्थ होता है: मूसा की व्यवस्था। (3) पौलुस ने व्यवस्था के अविरल महत्व की पुष्टि की जब उसने कहा कि वह "मसीह की व्यवस्था" के अधीन है। यह मसीह निर्धारित करता है कि व्यवस्था के कौन से भाग का महत्व बना हुआ है, और कौन से भाग को नई वाचा के अधीनों पर बाध्य नहीं करना है।

पौलुस ने मान लिया कि मसीह में होना उसकी व्यवस्था के अधीन होना है। उसने विश्वासियों से आग्रह किया कि "एक दूसरे के भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो" (गला. 6:2)। प्रेरित ने यह स्पष्ट किया कि मसीह के अधीन होने का अर्थ है उसकी व्यवस्था का पालन करना। उसका "व्यवस्था" शब्द के प्रति कोई विरोध नहीं था। पौलुस ने कैसे "मसीह की व्यवस्था" के लिए उपयुक्त विशिष्ट बातों को निर्धारित किया? क्या उसने यीशु की कही हुई बातों के किसी संकलन से लिया? उसका उल्लेख संकेत करता है कि मसीह की व्यवस्था मूसा की व्यवस्था के कुछ अंश अपने में ले लेती है, परन्तु हम किस कसौटी के आधार पर यह जान सकते हैं कि मसीह की व्यवस्था मूसा की व्यवस्था से कीं बातों में भिन्न है? इस उपयुक्त भिन्नता को करने के लिए पौलुस पवित्र आत्मा की अगुवाई पर निर्भर हुआ। उसने एक अनुपम विधि से मूसा की व्यवस्था की, धरती के यीशु की, और पवित्र आत्मा की अगुवाई द्वारा उसे मिली शिक्षाओं का सामंजस्य कर लिया। उसे अपने अंदर आश्वासन था कि सार्वभौमिक प्रभु अपनी इच्छा को, अपनी आत्मा की मध्यस्थता के द्वारा, अपने प्रेरितों के पास पहुँचाता है।

आयत 22. पौलुस ने कहा, **मैं निर्बलों के लिये निर्बल सा बना, कि निर्बलों को खींच लाऊं।** औरों की मसीह में वृद्धि की सहायता के लिए प्रेरित अपने व्यवहार को उसके अनुकूलित करने के लिए तैयार था जिससे उसके दुर्बल भाई को संतुष्टि मिलती थी - यदि उस व्यवहार में उसे कुछ गलत नहीं करना पड़ता। अवश्य ही पौलुस के अनुकूलन की सीमाएं थीं। बेन विदरिन्गटन तृतीय ने इसे स्पष्ट किया: "वह यह नहीं कहता है कि मूर्तिपूजकों के लिए वह मूर्तिपूजक बना या व्यभिचारियों के लिए वह व्यभिचारी बना।"[10] प्रेरित का अपना कोई व्यक्तिगत कार्यक्रम नहीं था, उसे किसी अहम की रक्षा नहीं करनी थी, और न ही कुछ प्रथाओं को आगे बढ़ाना था। उसका एकमात्र उद्देश्य था कि उन्हें ढूंढे जो पाप में खोए हुए थे और फिर उन्हें मसीह तथा उद्धार की ओर बढ़ाए। जहाँ तक संभव था उसने औरों की प्रथाओं को यथासंभव अनुकूलित किया, **कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं।** अपने प्रचार का अपने व्यवहार से मेल करवा

कर, पौलुस कह सका, “कोई अपनी ही भलाई को न ढूंढे, वरन औरों की” (देखें 10:24)।

आयत 23. पौलुस बात पूरी करने के लिए दृढ़-निश्चय था। उसने लिखा, **मैं सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूं।** उसके जीवन का प्रत्येक कार्य मसीह के राज्य की बढ़ोतरी के लिए था। उसका प्रचार और उपदेश न केवल पाप में खोए हुए पुरुषों और महिलाओं के लिए थे; वे उसकी अपनी शिक्षा तथा उन्नति के लिए भी थे। उसने कहा, खोए हुओं को मसीह के पास लाने में अगुवाई करने से वह, औरों के साथ उसका भागी हो गया था। वाक्यांश “उसका” (αὐτοῦ, *औतोऊ*) का पूर्ववर्ती वह सुसमाचार था जिसका पौलुस प्रचार करता था। जो वह कर रहा था उसे करने के द्वारा वह सुसमाचार की आशीषों का पुनः भागी हो गया था। पी. टी. ओ'ब्रायन का मानना था कि अंतिम भाग के अर्थ को इस प्रकार समझना चाहिए “पौलुस की सुसमाचार की गतिशील प्रगति में भागीदारी”; और फिर आगे कहा, “वह सुसमाचार का सह-भागीदार या जोड़ीदार है।”[11]

इनाम की ओर प्रयास करना (9:24-27)

[24]क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो कि जीतो। [25]हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है; वे तो एक मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं जो मुरझाने का नहीं। [26]इसलिये मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूँ, परन्तु लक्ष्यहीन नहीं; मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूँ, परन्तु उस के समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। [27]परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ।

9:24 के आरम्भ में, पौलुस ने प्रतियोगिता की भाषा का उपयोग करते हुए, एक और उदाहरण को सम्मिलित किया। पहली शताब्दी के यूनानी-रोमी संसार में एथलेटिक्स (खेलकूद) अत्यन्त लोकप्रिय थे। महत्वपूर्ण नगर नियमित अन्तराल पर एथलेटिक (खेलकूद) प्रतियोगिताएँ प्रायोजित किया करते थे, कुछ मामलों में यह वार्षिक होती थीं। शूरवीर खिलाड़ी पुरस्कार प्राप्त करते हुए नगरों और कस्बों की यात्रा किया करते थे। अधिकारियों ने उन्हें सम्मानित करने के लिए स्मारक खड़े करवाए; उनके नाम प्रत्येक घराने में परिचित हो गए। युवा पुरुषों ने खिलाड़ी होने की महिमा पाने का प्रयास किया, जैसे इस समय कई युवा लोग पेशेवर खेल खेलने का सपना देखते हैं। उत्साही दर्शकों ने, उस समय आज ही के समान, इन उद्योगों को आगे बढ़ाया।

जीतने वाले खिलाड़ियों को प्रथम शताब्दी के समस्त संसार में लोकप्रियता प्राप्त हुई, परन्तु यूनान खेलों के लिए घर था। छठी और सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व में यूनानी आर्थिक विस्तार और सांस्कृतिक महत्व का फलना-फूलना पहली

ओलंपियाड से दिनांकित किया जा सकता है, पारम्परिक रूप से इसे 776 ई.पू. निर्धारित किया गया है। प्राचीन लेखकों ने ओलंपिया के खेल आयोजित होने के संबंध में होने वाली घटनाओं के द्वारा तिथि-निर्धारण करके शताब्दियों को चिन्हित किया।

सम्भवतः पौलुस इस्थिमिया और हर कहीं सामान्य खेलों का अनुचर रहा होगा। उसने खेलों से निकली हुई उपमाओं का अन्य वाक्यांशों में भी इस्तेमाल किया है (गला. 2:2; 5:7; फिलि. 2:16; 2 तीमु. 4:7)। पैन-यूनानी खेलों में विजेताओं के लिए पुरस्कार एक पत्तेदार मुकुट था, जिसे पायथियन खेलों में लॉरेल (जयपत्र) से बनाया जाता था, परन्तु इस्थिमिया में इसे देवदार या जंगली अजवाइन से बनाया जाता था। किसी भी खेल में सोने, चाँदी या पीतल के पदक नहीं दिए जाते थे। प्रत्येक प्रतियोगिता में केवल एक विजेता होता था; बाकि सभी लोग हार जाते थे। पौलुस ने मसीही जीवन के अन्त की तुलना मुकुट प्राप्त करने से की ("इनाम"; फिलि. 3:14; "मुकुट"; 1 थिस्स. 2:19)।

खेलों में विजेता खिलाड़ी को दिए जाने वाले इनाम के लिए यूनानी शब्द στέφανος (*स्टेफानोस*) है। अनुवाद अक्सर "मुकुट" शब्द को प्रस्तुत करते हैं, परन्तु पौलुस मसीही इनाम की एक आभूषण वाले मुकुट से तुलना नहीं कर रहा था जिसे कोई राजा पहनता। इसके आगे, विजेता की पत्तियों से बना मुकुट शीघ्र ही मुरझा जाता था। जो इनाम मसीह देता है वह पाप के ऊपर विजय है, न कि बहुतायत या अधिकार। जो गीत स्वर्गीय आनन्द के सन्दर्भ में मकानों और मुकुटों की घोषणा करते हैं वे बाइबल की उपमाओं के एक भ्रम का प्रदर्शन करते हैं। यहाँ पर केवल एक ही तुलना है कि मसीही मिशन को आत्म-अनुशासन और प्रयास की आवश्यकता है। यह एक सुख का जीवन नहीं है। पौलुस का संदेश मसीही जीवन की शैली के विषय में है। वह अपने भाइयों को आत्म-अनुशासन का अभ्यास करने के लिए बुला रहा था।

आयत 24. पिछली आयतों में पौलुस के विचारों की धारा को जानना 9:24 समझने के लिए महत्वपूर्ण है। प्रेरित ने कुरिन्थियों से अपने अधिकारों का दावा करने की तुलना में दूसरों के आत्मिक कल्याण के बारे में अधिक चिंता करने की विनती की (8:13)। वह उनसे चाहता था कि वे ऐसा व्यवहार करने में जो कलीसिया का निर्माण करेगा, उसके स्वयं के उदाहरण का अनुसरण करें। मूर्तिपूजा के ऊपर उसकी चर्चा ने प्राथमिकताओं पर विचार करने का नेतृत्व किया था। अधिकारों का दावा करने की तुलना में मसीह के लिए आत्माओं को जीतना और इसे बनाए रखना अति महत्वपूर्ण था। पौलुस स्वयं प्रभु के लिए लोगों को जितने की खातिर "सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना" (9:22)। एक मसीही का जीवन जीने में अधिकारों का त्याग और आत्म-संयम का अभ्यास करने की आवश्यकता थी। पत्र को प्रस्तुत करने के लिए, पौलुस ने अपना ध्यान खेलों के अखाड़े की ओर किया।

साधारण पैदल दौड़ से अधिक प्राचीन कोई भी प्रतियोगिता नहीं है। पुरुष एक कतार में खड़े होते हैं, इसके बाद एक संकेत पर, लक्ष्य की ओर दौड़ते हैं। जो

कोई वहाँ पहले पहुँचता है वह जीत जाता है। आधुनिक ओलिंपिक खेलों में मैराथन की प्रतिष्ठा के समान कोई और प्रतियोगिता नहीं है। यद्यपि अन्य प्रतियोगिताएँ आती और जाती रहती हैं, पैदल दौड़ व्यक्ति से व्यक्ति तक प्रतियोगिता का एक आदर्श उदाहरण है। पौलुस के उदाहरण में, दौड़ एक व्यक्ति के अपने प्रतिद्वंदियों के ऊपर विजय प्राप्त करने के विषय में नहीं है; यह उसके विषय में भी नहीं है जो इनाम जीत लेता है। पौलुस दौड़ने के ढंग के प्रति विचारमग्न था। प्रेरित ने कहा, **तुम वैसे ही दौड़ो कि जीतो**। एक मसीही को अपनी सारी शक्ति के साथ दौड़ना चाहिए, मानो केवल वह ही विजेता का मुकुट प्राप्त कर सकता है।

आयत 25. पौलुस की आत्मा के द्वारा दिए गए फल की सबसे प्रख्यात सूची में "संयम" (गला. 5:22, 23), स्वयं को वश में करना है। खिलाड़ी ओलम्पिया में एक वर्ष पहले ही एक सख्त आहार नियम और अभ्यास के लिए जुट जाते थे। एक विजेता खिलाड़ी के समान ही, एक मसीही के समान जीना कमज़ोर हृदय वालों के लिए नहीं है। प्रेरित का तर्क छोटे से बड़े की ओर प्रगति करता है। खिलाड़ियों ने अपनी अभिलाषाओं पर काबू किया और **मुरझाने वाला मुकुट** (φθαρτὸν στέφανον, *फ्थरटोन स्टेफानॉन*; 1 कुरि. 9:25) जीतने की खातिर बहुत बड़े बलिदान दिए। तो मसीहियों को **अविनाशी मुकुट** को प्राप्त करने के लिए अपनी शारीरिक अभिलाषाओं को वश में करने के लिए कितनी अधिक प्रेरणा दिखानी चाहिए! पौलुस के मन में अपनी ऊर्जा के प्रत्येक अंश के साथ प्रयास करता हुआ एक खिलाड़ी था, परन्तु वह ये नहीं कह रहा था कि मसीही अनन्त जीवन के लिए एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। यूनानी अखाड़े सामूहिक खेलों से अज्ञात थे, परन्तु स्वर्ग के राज्य में जीवन मसीहियों को अन्य लोगों को अपने साथ अनन्त जीवन में ले जाने के लिए बुलाता है। जिस प्रकार देह के अंग सम्पूर्ण देह की भलाई के लिए एक साथ कार्य करते हैं उनसे विभिन्न चित्रण लेते हुए, प्रेरित ने बाद में अपने उस बिंदु को रखा (12:12)।

आयत 26. उद्देश्यहीन आचरण मसीही जीवन को परिभाषित नहीं करता। जिस प्रकार एक खिलाड़ी का ध्यान सीमा रेखा पर होता है, पौलुस यह जानता था कि उसका जीवन एक उद्देश्यपूर्ण समाप्ति की ओर बढ़ रहा था। उसके जीवन का लक्ष्य यीशु के माध्यम से परमेश्वर की महिमा करना था। यीशु के ही समान, पौलुस ने विजय की आशा की; क्योंकि वह लोगों की आत्माओं को जीत रहा था, और उनका क्षमा किए जाने और पाप से छुड़ाए जाने की ओर नेतृत्व कर रहा था। यदि इसका अर्थ प्रभु से आत्माओं को अलग करना था, तो प्रेरित के पास अधिकारों के अर्थहीन दावों का समय नहीं था।

इस उपमा को एक धावक या दौड़ने वाले से बदलकर, प्रेरित ने एक पहलवान पर विचार किया। उसने लिखा, **मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूँ, परन्तु उस के समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है।** मुक्केबाज़ी यूनानी-रोमी खेलों में एक क्रूर व्यवसाय था। जिस प्रकार एक सामान्य धावक एक गंभीर मैराथन धावक की श्रेणी के समान नहीं है, उसी प्रकार एक अंधेरों में लड़ने वाला

मुक्केबाज़ एक ओलंपिक मुक्केबाज से भिन्न है। मसीही जीवन में इस प्रकार के उद्देश्य और अनुशासन की आवश्यकता पड़ती है जो एक दृढ़ निश्चयी, संयमी खिलाड़ी के गुणों को प्रदर्शित करेंगे।

आयत 27. पौलुस के मन में उस समय निस्संदेह साधना करने का भाव था जब उसने लिखा कि, "...क्योंकि देह की साधना से कम लाभ होता है" (1 तीमु. 4:8)। प्रेरित ने आत्मत्याग को स्पष्ट तौर पर कुछ मूल्य की वस्तु समझा। हालाँकि साधना से कोई भी आशीष क्यों न मिलती हो, जब पौलुस ने यह कहा कि **मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ,** उसके मन में स्वयं को दंडित करने वाली पीड़ा नहीं थी। उसने केवल एक उद्देश्यपूर्ण जीवन के विषय में लिखा था। पौलुस ने कहा,एक पवित्र जीवन जीने के एक कार्यक्रम में समन्वित आत्म-अनुशासन, एक लाभकारी उद्देश्य प्रदान करता है। इसका अन्त एक ऐसा जीवन है जो मसीहियों के उद्धारकर्ता और राजा का आदर करता है।

पौलुस ने इस बात को पहचान लिया था कि एक प्रेरित होना और अपने जीवन को सुसमाचार के लिए खर्च कर देना उसके जीवन के अन्तिम दिन में छुटकारे का आश्वासन नहीं था। अस्वीकार किए जाने की सम्भावना उसके लिए भी अस्तित्व में थी। उसे और कुरिन्थ के मसीहियों को स्वयं को अनुशासित करने की आवश्यकता इस सम्भावना के कारण थी कि जिस को पाप से छुड़ाया गया है कहीं वह मसीह से फिरकर **निकम्मा ठहरे**। लोगों ने कई बार अपने विश्वास रुपी जहाज को डुबो दिया (1 तीमु. 1:19, 20)। जिस यूनानी शब्द का "अयोग्य" (ἀδόκιμος, *अडोकीमोस*) में अनुवाद किया गया है वह ऐसे व्यक्ति का वर्णन करता है जिसकी परीक्षा हुई है परन्तु वह परीक्षा में विफल हो चुका है। विदरिंगटन ने सही ही कहा था, "यह एकदम स्पष्ट है कि पौलुस यह सोचता है कि उसके लिए और उसके सुननेवालों के लिए यदि वे मसीह की व्यवस्था पर न चलें तो मुकुट का खो जाना सम्भव है।"[12]

अनुप्रयोग

स्वतंत्रता को छोड़ देने का अधिकार

सामान्य तौर पर, एक व्यक्ति स्वतंत्रता का दावा उसका अभ्यास करने के लिए करता है। जब अमेरिका में अफ़्रीकी-अमरीकी महिलाओं को मतदान करने का अधिकार प्राप्त हुआ तो, उन्होंने मतदान किया। थोड़े ही लोग इस प्रकार के अधिकार के लिए लड़ने और मरने के लिए तैयार हैं जो केवल सैद्धान्तिक तौर पर दिया जायेगा। इस प्रकार के अधिकार का क्या मूल्य है जिसका कोई अभ्यास नहीं करता? फिर भी, पौलुस ने उन स्वतंत्रताओं का ज़ोरदार बचाव किया जिनका उसने इस्तेमाल न करने का चुनाव किया था। उसने कहा, एक मसीही खतना करवाने और न करवाने के लिए स्वतन्त्र था (गला. 5:6), चूंकि खतनारहित होने के कारण मसीह के प्रचार के द्वार बंद हो सकते थे, तो पौलुस ने तीमुथियुस का खतना करवाया (प्रेरितों. 16:3)। प्रेरित ने आर्थिक सहायता के

अधिकार का दावा किया (1 कुरि. 9:14; 9:14; गला. 6:6), फिर भी उसने कुरिन्थ की कलीसिया से भौतिक सहायता प्राप्त करने से मना कर दिया (1 कुरि. 9:12)। पौलुस ने उन अधिकारों का दावा किया जिनका इस्तेमाल करने की उसकी कोई मंशा नहीं थी।

अध्याय 8 और 9 में पौलुस की चर्चा के केंद्र में कुरिन्थी भाइयों का इस बात पर ज़ोर देना था कि उनके पास एक मूर्ती को चढ़ाए गए माँस को खाने का अधिकार था। पौलुस ने यह स्वीकार किया कि जो माँस बाज़ार से खरीदा गया था वह एक मूर्ती के आगे चढ़ाए जाने के कारण आत्मिक तौर पर दूषित नहीं था (10:25); हालाँकि, प्रेरित ने सीधे तौर पर कहा कि मूर्ती के मन्दिर में माँस को झूठे देवता की प्रशंसा करने की रस्म के भाग के रूप में खाना एक पाप था (देखें 10:21)। कोई विश्वास या ज्ञान इस कार्य के स्वरूप: मूर्तिपूजा को जैसा यह प्रतीत होता था उससे बदल नहीं सकता था। इसी के साथ, पौलुस ने उस नकारात्मक प्रभाव की ओर भी संकेत किया जो एक मसीही के मूर्ती के मेज़ पर खाने से दूसरों पर पड़ता। यदि एक मसीही एक मूर्ती के मन्दिर में खाते समय मूर्तिपूजा से दूर भी रहता, तो भी वह एक निर्बल मसीही को पाप करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता था (8:9)। एक बलवान मसीही को एक निर्बल मसीही की खातिर अपनी स्वतन्त्रता को छोड़ देने की इच्छा रखनी चाहिए।

आज मसीहियों में इसी के समान दुविधाएं हो सकती हैं। एक व्यक्ति को किस समय एक निर्बल भाई के विवेक खातिर अपने अधिकार को छोड़ना है, और किस समय उसे अन्य लोगों के रीति रिवाज़ों से बांधे जाने का इनकार करना है? इसका बाइबल आधारित उत्तर है कि यह सब परिस्थितियों पर निर्भर करता है। यीशु मसीही के पीछे चलने वालों ने अस्वच्छ हाथों से भोजन किया; उन्हें केवल फरीसियों को ठेस न पहुँचाने के लिए मनुष्य के द्वारा थोपी गई हाथ धोने की रीति का पालन करने के लिए विवश नहीं किया गया (मत्ती 15:2; मरकुस 7:5)। जिन लोगों का हम प्रतिदिन सामना करते हैं उनके विवेक के अनुसार जीना असम्भव होगा। हालाँकि, कुछ मामलों में, जब हम एक संगी मसीही की सच्चाई को उसके द्वारा बाइबल को समझने के ढंग से जान जाते है, तो हमें अपने अधिकारों का अभ्यास करने और उस भाई के ठोकर का कारण बनने के बजाय हमें कुछ अधिकारों को स्वेच्छा से त्यागने के लिए तैयार रहना चाहिए।

विवाह आदरणीय है

सम्प्रदायों में साधना के लिए अनुचित ढंग से सिर उठाना शायद ही असामान्य बात है। अविवाहित जीवन साधना का एक रूप हो सकता है। बाइबल के आश्वासन के बिना कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि यौन सम्बन्ध स्वाभाविक तौर पर अविवाहित जीवन से कम पवित्र हैं। यह तर्क इसी के समान है कि एक मसीही उपवास कर सकता है और स्वयं की आत्मिक उन्नति के लिए भोजन से इनकार कर सकता है, इसी के समान ही यौन आनन्द से इनकार करने का परिणाम भी आत्मिक उन्नति हो सकता है। बहुत सी शताब्दियों से, रोमन

कैथोलिकवाद ने अपने पादरियों के साथ अविवाहित जीवन को जोड़ दिया है। इसके विपरीत, इब्रानियों के लेखक ने लिखा, "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और विवाह का बिछौना निष्कलंक रहे" (इब्रा. 13:4)। पौलुस ने विवाह से मना करने वाले लोगों को विश्वास का इनकार करने वालों के मध्य रखा (1 तीमु. 4:1-3)। इसी के साथ, उसने 1 कुरिन्थियों 9:5 में लिखा, "क्या हमें यह अधिकार नहीं, कि किसी मसीही बहिन के साथ विवाह करके उसे लिये फिरें, जैसा अन्य प्रेरित और प्रभु के भाई और कैफ़ा करते हैं?" बाइबल उन लोगों के लिए को समर्थन प्रदान नहीं करती जो यह दावा करते हैं कि अविवाहित जीवन विवाहित जीवन से आत्मिक तौर पर सर्वोच्च है।

मज़दूर अपनी मज़दूरी पाता है

एक प्रचारक आर्थिक प्रतिफलों से असंबंधित कारणों के लिए एक मण्डली के साथ किसी कार्य को लेकर स्वयं को विचित्र स्थिति में पाता है, यद्यपि उसे अपने परिवार का पालन पोषण करने के लिए कलीसिया से आर्थिक सहायता की आवश्यकता होती है। परमेश्वर के राज्य में मजदूरों की आर्थिक सहायता के विषय में भरपूर मात्रा में बाइबल की शिक्षाएं और उदाहरण हैं। पौलुस ने मूसा के वचनों का उद्धरण दिया, "दांवते समय चलते हुए बैल का मुँह न बान्धना" (व्यव. 25:4), तर्क के लिए एक प्रेरित या पुरनिया जो मनुष्यों की आत्माओं के लिए परिश्रम करता है उसे अपने प्रयत्नों के लिए भौतिक सहायता मिलनी चाहिए (1 कुरि. 9:9; 1 तीमु. 5:18)। इसी के विस्तार के अनुसार, पौलुस का तर्क सुसमाचार प्रचारकों और उन अन्य लोगों पर भी लागू होता है जो परमेश्वर के राज्य की खातिर परिश्रम करते हैं। 1 तीमुथियुस 5:18 में, पौलुस ने यीशु मसीह के द्वारा उस समय बोले गए कथन का उद्धरण दिया जो उसने बारहों को उनके सीमित संसाधनों के साथ भेजते समय कहा था; "मज़दूर अपनी मज़दूरी के योग्य है" (देखें मत्ती 10:10)। प्रेरित ने गलातियों लिखा, "जो वचन की शिक्षा पाता है, वह सब अच्छी वस्तुओं में सिखानेवाले को भागी करे।" (गला. 6:6)। पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया को उनकी सहायता के लिए सराहा (फिलि. 4:15; देखें 2 कुरि. 11:9)।

पवित्रशास्त्र में प्रचारकों को भौतिक सहायता करने के उदाहरण भरपूर मात्रा में है, परन्तु इसके विवरण सहायता उपलब्ध करने वालों के ज्ञानपूर्ण चुनावों पर आधारित हैं। जो कलीसिया में परिश्रम करते हैं वे सामान्य तौर पर किराए पर लिए गए हाथ नहीं हैं। एक सुसमाचार प्रचारक जो केवल वेतन के लिए कार्य करता है वह उस भेद की ओर ध्यान को ले जाता है जिसका चित्रण यीशु ने चरवाहे और मज़दूरी पर रखे गए व्यक्ति के विषय में किया था (यूहन्ना 10:11, 12)। परमेश्वर के राज्य में प्रत्येक पूर्ण-कालिक मज़दूर को अपने प्राण में खोजने की आवश्यकता है। जो कोई भी अपना जीवन मसीह के प्रचार के लिए देता है यदि वह निरंतर उच्च वेतन और आरामदायक परिस्थितियों की खोज में रहता है तो वह प्रभु और उसके लोगों का अनादर करता है। उसी क्षण, उसका

अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त वेतन पर ज़ोर देना उसके अधिकारों के अन्तर्गत है।

कलीसियाओं का यह कर्तव्य है कि वे उन लोगों से भला व्यवहार करें जो सुसमाचार फ़ैलाने के लिए अपना समय और ऊर्जा अर्पित करते हैं। "इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उनकी जीविका सुसमाचार से हो।" (1 कुरि. 9:14)। जो "उचित व्यवहार" का अर्थ है वह प्रत्येक मण्डली के द्वारा लिया जाने वाला एक निर्णय है। एक सामान्य नियम के रूप में, एक प्रचारक के पास न तो अति लाभपूर्णता वेतन होना चाहिए और न ही कलीसिया में सबसे अपर्याप्त वेतन होना चाहिए। जब एक प्रचारक के वेतन की मात्रा का निर्धारण किया जाए तो उसकी ऊर्जा, स्वाभाविक योग्यताएं, प्रशिक्षण, स्थिरता, उदाहरण इन सभी पर विचार किया जाना चाहिए।

एक व्यक्ति द्वारा उसकी कलीसिया में पूर्णकालिक तौर पर मसीह की सेवा करने की क्षमता यह आश्वासन नहीं देती कि लालच उसके हृदय में कार्य करना बंद कर देगा। लालच के समान ही कुछ लालसाएं एक मनुष्य की आत्मा के लिए व्यापक और निर्बल करने वाली होती हैं। लालच परमेश्वर के प्रेम को चुरा लेता है और उन वस्तुओं को प्रेम देता है जो तृप्त नहीं करतीं।

पवित्रशास्त्र का दृष्टान्तिक उपयोग

9:8, 9 में पौलुस की चर्चा दिखाती है कि, एक प्रेरणा प्राप्त प्रेरित के रूप में, उसके पास पुराने नियम के एक वाक्यांश को लेने और उसे एक दृष्टान्तिक अर्थ देने का अधिकार था। हालाँकि, क्या आज मसीहियों के लिए बाइबल के कथन को उसके सन्दर्भ से बाहर निकालकर एक ऐसे विषय में लागू करना स्वीकार्य है जिसका उससे कोई सम्बन्ध नहीं है? हम केवल इतना ही कह सकते हैं: वर्तमान में पवित्रशास्त्र का उपयोग अनुवादक के विचारों के अनुसार ग्रहणशील है। यह कहना सुरक्षित होगा कि मसीहियों को एक दृष्टान्त के उपयोग में उससे आगे नहीं जाना चाहिए जितना बाइबल का लेखक स्वयं गया था।

समाप्ति नोट्स

[1]डेविड ई. गारलैंड, *1 कुरिंथियंस*, बेकर एक्जेजेटिकल कमेंट्री आन द न्यू टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः बेकर अकेडेमिक, 2003), 405. [2]शब्द "प्रेरित" के रूप (ἀπόστολος, *अपोस्टोलोस*) का अनुवाद 2 कुरिन्थियों 8:23 में "भेजे हुए" और फिलिप्पियों 2:25 में "दूत" हुआ है। [3]जॉन पेंटर, *जस्ट जेम्स: द ब्रदर ऑफ जीसस इन हिस्ट्री एण्ड ट्रैडिशन*, 2न्ड एड. (कोलंबिया, एस.सी.: यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ कैरोलिना प्रैस, 2004), 159-81. [4]यूनानी-रोमी स्त्रोत प्रगट करते हैं कि परिश्रम करना सभी स्थानों पर तुच्छ नहीं समझा जाता था। लेख यह नहीं कहते हैं कि सामान्यतः धनी उनके परिश्रम की प्रशंसा करते थे जो उनकी सेवा भली-भांति करते थे। (रॉबर्ट एम. ग्रांट, *अर्ली क्रिश्चियनिटी एण्ड सोसाईटी* [लंडन: कॉलिंस, 1977], 66-95.) [5]यूनानी-रोमी सँसार में पुजारियों का संक्षिप्त सार एवरेट फर्ग्यूसन, *बैकग्राउंड्स ऑफ अर्ली क्रिश्चियनिटी* (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: वम. बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1987), 141-43, में मिलता है। [6]गारलैंड, 415.

[7]रुडॉल्फ़ बुल्टमन, “καυχάομαι,” इन *थियोलॉजिकल डिक्शनरी आफ द न्यू टेस्टामेंट*, एड. गेरहार्ड किट्टल, ट्रांस. जिओफ़्रे डब्ल्यू. ब्रोमिली (ग्रान्ड रेपिड्स, मिश.: विम. बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1965), 3:645-54. [8]वॉल्टर बौअर, *अ ग्रीक-इंगलिश लेक्सिकॉन ऑफ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिट्रेचर*, 3रड एड., रेव. एण्ड एड. फ्रेड्रिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000), 313. [9]हरमन रिड्डरबोस, *पौल: एन आउटलाइन ऑफ हिज थियोलोजी*, ट्रांस. जौन रिचर्ड डिविट्ट (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: वम. बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1975), 284-86. [10]बेन विदरिन्गटन तृतीय, *कॉनफ्लिक्ट एण्ड कौमम्युनिटी इन कोरिन्थ: अ सोशियो-रहीटौरिकल कॉमेन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 कोरिन्थियन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: वम. बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1995), 213.

[11]पी. टी. ओ'ब्रायन, *गौस्पल एण्ड मिशन इन द राईटिंग्स ऑफ पौल: एन ऐक्सीजेटिकल एण्ड थियोलोजिकल एनालिसिस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: बेकर बुक्स, 1995), 96. [12]विदरिंगटन, 214.